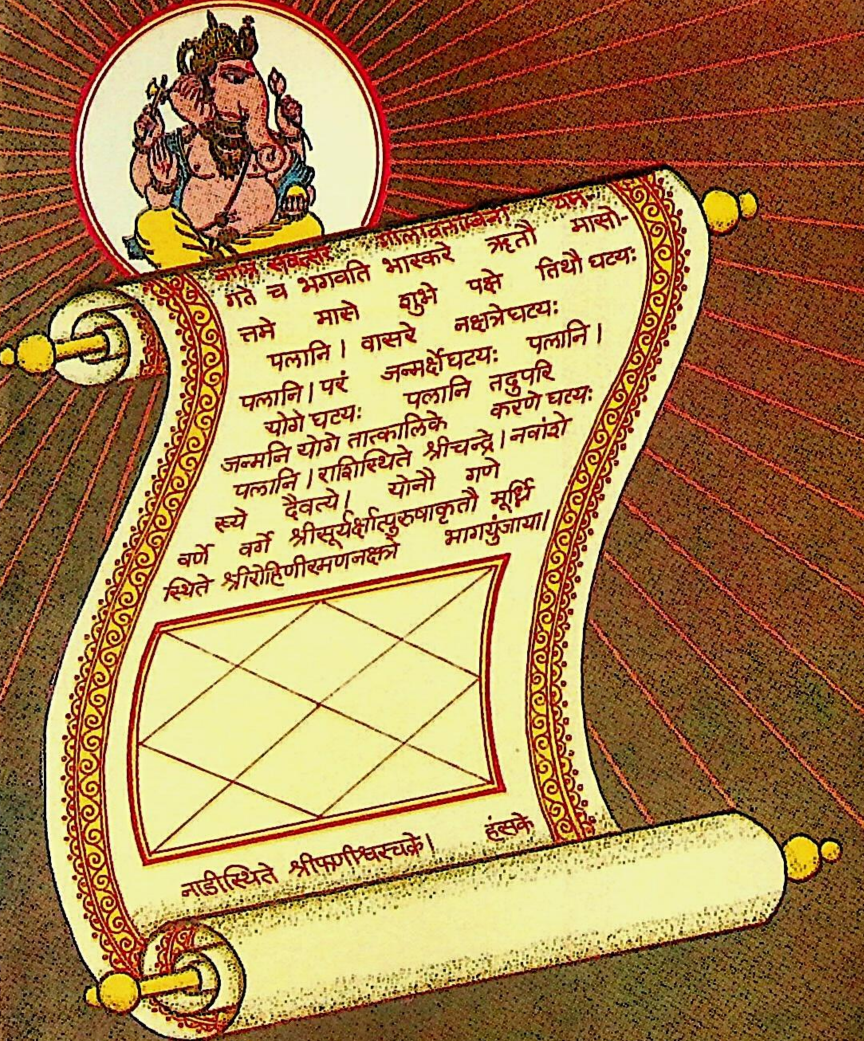

गते च भगवति भास्करे ऋतौ मासो-
त्तमे मासे शुभे पक्षे तिथौ घट्यः
पलानि । वासरे नक्षत्रे घट्यः
पलानि । परं जन्मर्क्षे घट्यः पलानि ।
योगे घट्यः पलानि तदुपरि
जन्मनि योगे तात्कालिके करणे घट्यः
पलानि । राशिस्थिते श्रीचन्द्रे । नवांशे
स्ये दैवत्ये । योनौ गणे
वर्णे वर्गे श्रीसूर्यर्क्षात्पुरुषाकृतौ मूर्ध्नि
स्थिते श्रीरोहिणीरमणनक्षत्रे भागयुंजाया।
नाडीस्थिते श्रीफणीश्वरचक्रे। हंसके

वर्षयोगसमुह

॥ श्रीः ॥

वर्षयोगसमूह

पण्डित - ज्वालाप्रसादजी मिश्रकृत

हिन्दी टीका सहित

खेमराज श्रीकृष्णदास
प्रकाशन
बम्बई

संस्करण:- सन् १९९४, सम्वत् २०५१

मूल्य १५ रुपये मात्र

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M / s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Bombay-400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

भूमिका

भारत वर्ष की सम्पूर्ण विद्याओं से ज्योतिष अलौकिक विद्या है. जिसके द्वारा यहां के विद्वान भूत, भविष्य और वर्तमान का समाचार यथार्थ जान सकते थे, यह विद्या चन्द्र सूर्य आदि ग्रहों के आधार से है. जिस प्रकार चन्द्र, सूर्य, जगत के प्रकाशक हैं इसी प्रकार ज्योतिप विद्या है और "चक्षुषी चन्द्रसूर्ययो:" इस श्रुति के अवलम्ब से यह विद्या परमात्मा के नेत्रवत् समझनी चाहिये. जब इस विद्या का पूर्ण विचार था, तब तक इस देश की बडी उन्नति थी, बहुत क्या, इसके आधार से यहाँके सम्राटों के चक्रवर्ती पुत्र हुए हैं. मुहूर्त से ही गर्भाधानादि संस्कार तथा सब शुभकार्य नगरनिर्माणादि विजय यात्रा जब तक होती रही तब तक यह देश उन्नति के शिखरपर रहा. कालक्रम से कुल पूज्य आचार्यों के चित्त में आलस्य आने लगा अर्थात् जब क्षत्रिय वैश्यादिने विचार किया कि, सब कृत्य आचार्यादि द्वारा पूर्ण होते ही हैं, विद्याओ में परिश्रम क्यों करें यह विचारके जब उन्होंने पढना त्याग दिया तब कुलाचार्य भी यजमानों को मूर्ख विचार अत्यन्त विद्या पढ़ने से विरत रहे और केवल कामचलाऊ विद्या पढकर यजमानों का मनोरंजन करने लगे. इस कारण अविद्या के मुहूर्त और फलित में अन्तर पडने लगे. जो अच्छे विद्वान् ज्योतिषादि शास्त्रों के ज्ञाता हैं, उनकी पहुँच उन धनी लोगोंतक वे कुलाचार्य होने नहीं देते. कारण कि, यजमानों के सन्मुख तो उन्होंने अपने को पूर्ण विद्वान रक्खा है. विद्वान के जाने से उनकी कलई खुल जाय इस कारण उनको वे प्रवेश नहीं होने देते और इधर वे विद्वान् वृत्तिकर्शित होने से विरत होते जाते हैं. धनी यजमानों का इस विद्या से विश्वास उठा जाता है, जिनपर कुछ आता है वे बताना नहीं चाहते इस कारण विद्या लुप्तप्राय होती चली जाती है. यहाँतक कि, यह विद्या भी अलभ्य रत्न हो रही है. और ग्रन्थ प्राय: लुप्त होते जाते हैं इस कारण बुद्धिमानों ने यह विचार किया है, कि, प्राचीन ग्रन्थों का भाषानुवाद करके सर्व साधारण के दृष्टि गोचर किया जाय. जिस से प्राचीन ग्रन्थों का प्रचार और उनकी रक्षा हो. और उनसे

संस्करण:- सन् १९९४, सम्वत् २०५१

मूल्य १५ रुपये मात्र

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M / s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Bombay-400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

भूमिका

भारत वर्ष की सम्पूर्ण विद्याओं से ज्योतिष अलौकिक विद्या है. जिसके द्वारा यहां के विद्वान भूत, भविष्य और वर्तमान का समाचार यथार्थ जान सकते थे, यह विद्या चन्द्र सूर्य आदि ग्रहों के आधार से है. जिस प्रकार चन्द्र, सूर्य, जगत के प्रकाशक हैं इसी प्रकार ज्योतिप विद्या है और "चक्षुषी चन्द्रसूर्ययो:" इस श्रुति के अवलम्ब से यह विद्या परमात्मा के नेत्रवत् समझनी चाहिये. जब इस विद्या का पूर्ण विचार था, तब तक इस देश की बडी उन्नति थी, बहुत क्या, इसके आधार से यहाँके सम्राटों के चक्रवर्ती पुत्र हुए हैं. मुहूर्त से ही गर्भाधानादि संस्कार तथा सब शुभकार्य नगरनिर्माणादि विजय यात्रा जब तक होती रही तब तक यह देश उन्नति के शिखरपर रहा. कालक्रम से कुल पूज्य आचार्यों के चित्त में आलस्य आने लगा अर्थात् जब क्षत्रिय वैश्यादिने विचार किया कि, सब कृत्य आचार्यादि द्वारा पूर्ण होते ही हैं, विद्याओ में परिश्रम क्यों करें यह विचारके जब उन्होंने पढना त्याग दिया तब कुलाचार्य भी यजमानों को मूर्ख विचार अत्यन्त विद्या पढ़ने से विरत रहे और केवल कामचलाऊ विद्या पढकर यजमानों का मनोरंजन करने लगे. इस कारण अविद्या के मुहूर्त और फलित में अन्तर पडने लगे. जो अच्छे विद्वान् ज्योतिषादि शास्त्रों के ज्ञाता हैं, उनकी पहुँच उन धनी लोगोंतक वे कुलाचार्य होने नहीं देते. कारण कि, यजमानों के सन्मुख तो उन्होंने अपने को पूर्ण विद्वान रक्खा है. विद्वान के जाने से उनकी कलई खुल जाय इस कारण उनको वे प्रवेश नहीं होने देते और इधर वे विद्वान् वृत्तिकर्शित होने से विरत होते जाते हैं. धनी यजमानों का इस विद्या से विश्वास उठा जाता है, जिनपर कुछ आता है वे बताना नहीं चाहते इस कारण विद्या लुप्तप्राय होती चली जाती है. यहाँतक कि, यह विद्या भी अलभ्य रत्न हो रही है. और ग्रन्थ प्राय: लुप्त होते जाते हैं इस कारण बुद्धिमानों ने यह विचार किया है, कि, प्राचीन ग्रन्थों का भाषानुवाद करके सर्व साधारण के दृष्टि गोचर किया जाय. जिस से प्राचीन ग्रन्थों का प्रचार और उनकी रक्षा हो. और उनसे

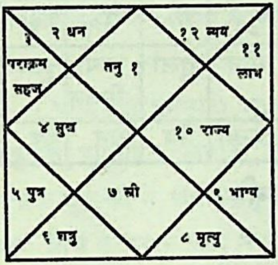
सब कोई लाभ उठावें . इससे एक यह भी बडा लाभ होता है कि, ग्रन्थकारों के ग्रन्थों में विशेष कर प्रक्षिप्त भी प्रवेश नहीं कर सकते कारण कि, यह देखने में आया है कि, व्रतादि के निर्णय में निज कल्पित श्लोक लिखकर प्रमाण देते हैं कि, हमारे अमुक ग्रन्थ में यह श्लोक टिप्पणी में लिखे हैं . श्लोक ही नहीं किन्तु ग्रन्थ के ग्रन्थ जो किञ्चित् भी सार नहीं होने से छूछे हैं महात्माओं के नाम से छपाये जाते हैं, उदाहरण के लिये देखिये कि, मुरादाबाद के एक पुरुष ने घटरामायण गोसांई तुलसादासजी के नाम से लखनउ में छपाई है . इसपर एक ठाकुरद्वार के महाशय अपनी बनाई रामायण को घटरामायण तुलसीकृत के नाम से छपा रहे हैं . और घोषणा करते हैं कि, वह नहीं यह "घटरामायण" है इत्यादि . बुद्धिमान्को उचित है कि, इस धोखे में न पडें . तुलसीदास गोस्वामी ने कोई घटरामायण नहीं बनाई, न कविता में लखाती हैं . यह अपना प्रयोजन सिद्ध करने के लिये प्रपञ्च है . इस कारण कविजनों के प्राचीन ग्रन्थों की रक्षा करना अवश्य है . ज्योतिष के यद्यपि अनेक ग्रन्थ छप चुके हैं, परन्तु वर्षफल के ग्रन्थ अभी उपयुक्त नहीं हुए हैं . हमको यह पुस्तक "वर्षयोगसमूह" की पण्डित नारायणदास चन्द्रावती निवासी द्वारा प्राप्त हुई . जो बहुत पुरानी लिखी थी . वर्षयोगसमूह वर्षफल जाननेके निमित्त बहुत उत्तम है और इसके योगफलादेश की विधि बहुत मिलती है, इस कारण इस ग्रन्थ का प्रकाश करना विचार भाषाटीका कर सर्वाधिकार सहित यह ग्रन्थ "श्रीवेंकटेश्वर" (स्टीम) यन्त्राधिपति परमोदार जगद्विख्यात वैश्यवंशदिवाकर सेठजी श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजी महाशय को समर्पण कर दिया है . पाठक महाशयों से प्रार्थना है कि, ग्रन्थ अवलोकन करके मेरे परिश्रम को सफल करें ॥

पंडित ज्वालाप्रसादमिश्र

अथ ग्रन्थकी परिभाषा

तहाँ द्वादशभवनोंके नाम

इस ग्रन्थ में जो विषय आये हैं उनकी परिभाषा तथा वर्ष निकालने की विधि लिखी जाती है. प्रथम द्वादश भवनों के नाम लिखते हैं -



१ पहला, चौथा, सातवाँ, दशवां इन घरों की केन्द्र संज्ञा है, इनको कंटक भी कहते हैं नौवे पाँचवे घर की त्रिकोण दूसरे पांचवें आठवें घर को तथा ग्यारहवें घर को पण फर कहते हैं. तीसरे छठे बारहवें को आपोक्लिम छठे आठवें बारहवें को त्रिक कहते हैं

(१) लग्न, मूर्ति, अंग, तनु, उदय, वपु, कल्प, आद्य ये आठ लग्न के नाम हैं ॥

(२) स्व, कोश, अर्थ, कुटुम्ब, धन, ये पांच धनके नाम हैं॥

(३) सहज, भ्रातृ, दुश्चिक्य ये सहजके नाम हैं ॥

(४) अम्बा, पाताल, तुर्य, हिबुक, सुहृद्, वाहन, यान, बंधु, अम्बु, नीर, जल, ये सुख के नाम हैं ॥

(५) तनय, बुद्धि, विद्या, आत्मज, वाक्य, पंचम, तनुज यह पुत्रस्थान के नाम हैं ॥

(६) रिपु, द्वेष, वैरी, क्षत, ये छठे भावके नाम हैं ॥

(७) जामित्र, अस्त, स्मर, मदन, मद, द्यून, काम ये सप्तम के नाम हैं ॥

(८) रन्ध्र, आयु, छिद्र, याम्य, निधन, लय, अष्टम, मृत्यु ये आठवें स्थान के नाम हैं ॥

(९) गुरु, धर्म, नवम, शुभ, तप, मार्ग, ये नवमें स्थान के नाम है ॥

(१०) तात, आज्ञा, मान, कर्म, आस्पद, गगन, नभ, व्योम, मेषुरण, मध्य, व्यापार, दशम, ये दशम घर के नाम है ॥

(११) भव आगम, प्राप्ति, आय, ये ग्यारहवें स्थान के नाम हैं ॥

(१२) प्रान्त, अन्तिम, द्वादश, रि:फ ये बारहवें घर के नाम हैं ॥

ग्रहका उच्च नीच चक्र

ग्रह	सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	रा०	के०
उच्च	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	कन्या मिथुन	तुला
नीच	तुला	वृश्चि.	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धन	मेष

राशियोंके स्वामी

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ।
बुधः कन्यामिथुनयोः कर्कस्यापतिः शशी ॥१॥
जीवो मीनधनुः स्वामी शनिर्मकरकुंभयोः ।
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ॥२॥

अर्थ – मेष वृश्चिक का स्वामी मंगल, वृष तुला का स्वामी शुक्र, कन्या मिथुन का स्वाामी बुध, कर्क का पति चन्द्रमा ॥१॥ मीन धन का मंगल, मकर कुंभ का शनि, और सिंह का सूर्य है ॥

राशियोंकी स्थिरचरातिसंज्ञा

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
चर	स्थिर	द्विस्व	च०	स्थि०	द्वि०	चर	स्थि०	द्वि०	च०	स्थि०	द्वि०
पु०	स्त्री	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०
क्रूर	सौम्य	क्रू०	सौ०	क्रू०	सौ०	क्रू०	सौ०	क्रू०	सौ०	क्रू०	सौ०
चतुष्पद	चतु०	द्विप	कीट	चतु०	द्वि०	द्वि०	की०	पूर्वार्ध द्विपद	च० जल	नर	जल

दृष्टिज्ञानम्।

जिस भाव में जो ग्रह है उससे तीसरे दशवें स्थान में एक चरण दृष्टि से देखते हैं. ९।५ दो चरण से, आठवें चौथे तीन चरण सप्तम में पूरे चार चरण दृष्टि से देखते हैं. ऐसा ही दृष्टि का फल भी है. कोई कहते हैं कि, सूर्य तीसरे, चन्द्रमा १०, मंगल नौमें, बुध पांचवें, बृहस्पति आठवें, शुक्र चौथे, शनि सप्तम पूर्ण दृष्टि से देखते हैं. यह निसर्गदृष्टि है ॥

ग्रहनाम

चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र ये सौम्य ग्रह हैं, सूर्य, मंगल क्रूर ग्रह हैं. शनि, राहु, केतु पापग्रह कहलाते हैं. बुध जैसे ग्रह के साथ होवै तैसा फल करता है. चन्द्रमा शुक्र स्त्री में, शेष ग्रह पुरुषत्व में बली होते हैं शेष निर्बल जानो, शुक्र चन्द्र मित्र के घर में, सूर्य मंगल पुरुष के घर में बलिष्ठ होते हैं ॥

अरिमित्रोदासीनचक्रम्।

ग्रह	सू०	च०	म०	बु०	बृ०	शु०	श०
मित्र	चं.बृ.म.	सू. बु.	सू.चं.बृ.	शु. सू.	मं. सू. चं.	बु. श.	शु. बु.
सम	बुध.	मं.बृ.शु.श.	शु. श.	श. बृ. मं.	श.	मं. बृ.	बृ.
शत्रु	शु. श.	०	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू.चं.मं.

वर्ष निकालनेकी विधि

वर्ष निकालने की सर्वोत्तम विधि तो यह है जिस संवत् का जन्म हो उसमें वर्तमान संवत् को घटावै, जो वर्ष निकलैं उनको १५ घडी ३१-३० साढे इकतीस पलसे गुणा करै, जो लब्धि हो उसमें इष्टके वार घडी पल जोड देनेसे वर्षका इष्ट जानना, और जो दिन हो उसको सातसे भागदे, जो बचैं सो दिन जानना, अथवा दो वर्ष सवाये अर्धकर पुनि ड्योढे करले। वार घडी पल इष्ट के जोड ताहिमें दे।

इन वार घड़ी पल इष्टों में वार अलग रक्खै और जन्मकुण्डली में सूर्य के जितने अंश बीते हों सारणी में देखकर उस खाने के अंकों को उसमें जोडे, उनकी लब्धि को सारणी में देखै जो राशी के कोष्ठमें वह अंक हो वही लग्न ठीक होगा.

उदाहरण-

संवत् १९३६ आश्विन शुक्ल नवम्यां गुरुवासरे ५० । १५, श्रवणमे ३९ । ९ तुलार्कगतांशाः ७ तत्रेष्टम् ६ । १५ वृश्चिक लग्नोदय जन्म।

इस कुंडलीका वर्ष बनाना है तौ १९५३ में से १९३६ घटाये १७ बचे इनको १५।३१।३० से गुणा किया तौ २३।५५।३० हुहुए इनमें वर्षकी घडी पल मिलाये तो ३०।१०।३० इष्ट हुआ. दूसरी विधि-

सत्रह १७ के सिवाये	२१	१५		
आधे		८	३०	
ड्योढे			२५	३०
	२१	२३	५५	३०
इष्टके घडी वारपल.	५	६	१५	
	२६ दिन	३०	१०	३०

छब्बीस दिन को सात से भाग दिया तो पांच बचे, तो इससे यह सिद्ध हुआ कि, तुला के सात अंश जाने पर पश्चमदिन में ३०।१०।३० पर वर्ष आरम्भ हुआ. इस विधि से एक दिन का अन्तर रहता है अब यह विचारना हैं कि उस समय क्या लग्न है, तो सारिणी में तुला के सात अंशपर ३५।३८ हैं, यह ३०।१०।३० में जोड दिये तो ५।४८ ३० हुये यह अंक सारणी में देखने से मेषलग्न में वर्ष आरम्भ हुआ जानना उस समय जो ग्रहों सो क्रम मे सब रख देना।।

मुन्था रखने की यह विधि है कि, बीते हुये वर्षों में जन्मलग्न मिलाकर बारह से भाग दे जो शेष रहे सो जन्मलग्न से मुन्था का स्थान जानै जैसे १७ में ८ मिलाया २५ हुए, बारह से भाग दिया एक बचा तो मेष के स्थान में मुंथा रख दो।

मुद्दादशा बनाने का क्रम

जन्म नक्षत्रकी संख्या में गताव्द की संख्या मिलावै इसमें से दो घटाकर नौ का भाग दे जो शेष रहे वहीं से दशा आरम्भ होगी यथा श्रवण नक्षत्र तेईसवां है इसमें सतरह जोडने से ४० हुए नौ से भाग दिया ४ बचे तो चौथी राहू की दशा से प्रारम्भ हुआ जानना।।

दशाके मास दिन

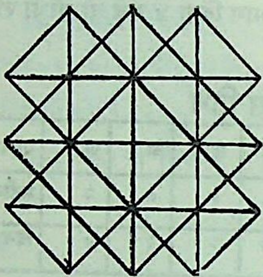
सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रहदशा
००	१	०	१	१	१	१	०	२	महीना
१८	००	२१	२४	१८	२७	२१	२१	००	दिन

पञ्चाधिकारी

वर्षमें पाँच अधिकारी बनावै मुंथेश, वर्षलग्नेश, जन्मलग्नेश त्रिराशिपति, दिनपति वा रात्रिपति राशिपति चक्रसे यह बात जाानने योग्य है . जिस राशिमें मुन्था हो उसका स्वामी मुन्थेश वर्षलग्नका स्वामी वर्षलग्नेश जन्मलग्नका स्वामी दिनमें वर्ष प्रवेश होय तो सूर्य राशिका स्वामी, रात्रीमें प्रवेश होय तो चन्द्र राशिका स्वामी लिखै . त्रिराशीश चक्रमें समझ लेना।।

राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दिवास्वा	सू:	शु.	श:	शु:	शु.	बु.	श.	शु.	सू.	सू.	श.	शु.
रात्रिस्वा	बृ:	च.	बु:	च:	बृ.	चं.	बु.	मं.	बु.	चं.	बु.	मं.
हद्दास्वा:	श:	मं:	बृ:	म:	श:	चं:	बृ:	मं:	श:	मं:	बृ:	मं:

इस प्रकार पञ्चाधिकारी लिखकर ग्रह अधिकारी देखे जिसके दो तीन अधिकार आवैं सो बलवान् जानै, और जिस दिनसे वर्ष प्रारम्भ हो वह सूर्यके अंश ग्रहके मासदिनमें जोडता चला जाय जैसे ६।७ पर राहुकी दशा प्रारम्भ हुई तौ १।२४ मिलानेसे ८।१ धनके एक अंशतक रहेगी इसी प्रकार और भी जानना ॥



त्रिपताकी चक्र वेध देखनेको लिखना इस पर बारह राशि स्थापित करना ग्रहन्यास इस प्रकार लिखे कि गत वर्षमें एक मिलाप आठसे भाग दे, शेष रहे सो जन्मकालमें चन्द्रराशिसे शेष स्थानमें चन्द्रमा लिखना चारसे भाग देकर जो शेष बचे उसे वहाँ अपने स्थानसे लिखना, और केतु अपने स्थानसे पीछे लिखे तो त्रिपताकी चक्रसे स्पष्ट होता है ॥

चन्द्रमासे ग्रहोंका वेध देखे, राहुसे चंद्रवेध होय तो अरिष्ट, सूर्यसे होय तो ताप, शनिसे रोग, मंगलसे पीडा, शुभसे जयप्राप्ति सुखलाभ हो, शुभग्रहका बल देखकर वेधमें फल कहना ॥

इस प्रकार छोटे विद्यार्थियोंको यह वर्ष बनानेकी बहुत सरल रीति लिख दीहै, इसको देखकर एकही बारमें वर्ष बनाना ध्यानमें आ सकता है. वर्ष बनाकर साधारण पद्मकोशसे और विशेष फल इस ग्रन्थसे कह सकते हैं ॥

पं ज्वालाप्रसाद मिश्र,
दीनदारपुरा (मुरादाबाद)

श्रीगणेशाय नमः

अथ वर्षयोगसमूहः

भाषाटीकासमेतः

लग्नाधिनाथः खलु रन्ध्रनाथ एको यदि स्यात्खलु रंध्रभावे ॥ तदा हि वर्षे रुधिरप्रकोपं शरीरकष्टं विविधप्रकारैः ॥१॥

मङ्गलाचरणम्

श्लोकः

नमस्कृत्य गुरुं शान्तं परमानन्ददायकम् ।
वर्षयोगसमूहस्य भाषाटीका विरच्यते ॥१॥

दोहा - गौरि गिरा गणपति गिरिश, रविशशि सिद्ध मनाय।
वर्षयोग शुभ ग्रंथकी, भाषा लिखत बनाय ॥१॥

जो लग्न का और आठवें घर का स्वामी एक होकर अष्टम स्थान में स्थित हो तो उस वर्षभर रुधिर का कोप और शरीर में अनेक प्रकार के कष्ट हो ॥१॥

सप्तमस्थो यदा चन्द्रो राहुणा यदि संयुतः ॥
तदा वर्षे महत्कष्टं स्त्रीणां कष्टं विशेषतः ॥

जो सप्तम स्थान में चन्द्रमा राहु के साथ हो तो उस वर्ष में अधिक कष्ट हो विशेषकर स्त्री को कष्ट हो ॥२॥

चन्द्रात्पंचमगो जीवो जीवान्नवमगः शशी ॥

तदारिष्टं न कुर्वीत रिपुरोगप्रणाशनम् ॥ ३ ॥

जो चन्द्रमा से पंचमस्थान में बृहस्पति, वा बृहस्पति से नवम स्थान में चन्द्रमा हो तो अरिष्ट नहीं होता। शत्रु और रोग का नाश हो ॥ ३ ॥

लग्नस्थिते रन्ध्रपतौ सपापे लग्नाधिपे चन्द्रयुतेऽष्टमस्थे ॥ तदा च वर्षे तनुसंक्षयः स्याच्छोकादिरोगेण वदन्ति सन्तः ॥ ४ ॥

जो अष्टमघर का मालिक पापग्रह सहित लग्न में स्थित हो और लग्न का मालिक चन्द्रमा के सहित अष्टम स्थान में स्थित हो तो उस वर्ष में शोक रोगादि से शरीर क्षय हो जाय यह विद्वान कहते हैं ॥ ४ ॥

षष्ठाष्टमे च लग्नेशो रन्ध्रस्थे भौमचन्द्रमाः।
तदा वर्षे विषान्मृत्युरथवा व्याघ्रदारणात् ॥

लग्न का अधिपति छठे वा अष्टमस्थान में हो, अष्टम में मंगल और चन्द्रमा हो तो उस वर्ष में विष अथवा व्याघ्र से मृत्यु हो ॥ ५ ॥

कर्मेशोऽस्तंगते रन्ध्रे षष्ठस्थे शनिचन्द्रमाः ॥
तदा वर्षेनृपान्मृत्युस्तथा रोगोत्थयातना ॥ ६ ॥

जो कर्म १० स्थान का अधिपति सातवें हो अष्टम घर में अस्त हो और छठे स्थान में शनि चन्द्रमा हों तो उस वर्ष में राजा वा रोग से मृत्यु हो ॥ ६ ॥

मृगपतिर्मदगः सबलो यदा खलखगैः सहितो न च वीक्षितः ॥ मुनिवरैर्गदितं बहुलं सुखं युवतिवर्गसुखं विविधं तदा ॥७॥

जो चन्द्रमा बलसहित सप्तमस्थान में प्राप्त हो क्रूरग्रहों के साथ न हो न उस को क्रूरग्रह देखते हों तो मुनिजनों ने कहा है कि अनेक प्रकार के विविध सुख स्त्री आदिक प्राप्त हो ॥७॥

लग्नं यदा दुष्टखगैः समेतं सौम्यैः खगैर्नो सहितं च दृष्टम् ॥ प्राप्नोति मध्यं बहुलं च वर्षे तदा विवादं कुजनैर्नराणाम् ॥८॥

जो लग्न में क्रूरग्रह पडे हों और सौम्यग्रह उस को न देखते हों तो वर्ष मध्यम है दुष्ट मनुष्यों से विवाद अधिक हो ॥८॥

समाधिनाथो यदि शत्रुनाथ एको यदि स्यात्तनुभावयातः॥ तदाहि वर्षे प्रकरोति शीघ्रमश्वादिरूढं नृपदत्तमानम् ॥९॥

जो ग्यारहवें और छठे घर का मालिक एक ही होकर लग्न में बैठा हो तो उस वर्ष में घोड़े आदि की सवारी और राजा से मान मिलै ॥९॥

अथ संतानयोगाः।

तुले विलग्ने शनिसंयुते च स्यात्सप्तम-
स्वाष्टमगः शशी च॥ तदा च वर्षे धनधान्य युक्तं
संतानलाभं कुरुते नराणाम् ॥१०॥

जन्म लग्न तुला शनिसंयुक्त हो, सप्तम अष्टम चन्द्र हो तो उस वर्ष में धनधान्य और सन्तान की प्राप्ति हो ॥१०॥

सप्तमस्थो यदा राहुर्भौमचन्द्रसमन्वितः॥
नृभिः क्लेशो महावर्षे तदा स्त्री निधनं धनम् ॥

जो सातवें स्थान राहु यदि मंगल और चन्द्रमा के सहित हो तो उस वर्ष में मनुष्यों से क्लेश और स्त्री धन की नष्टता होती है ॥११॥

यदि सुताधिपतिर्व्ययभावगो व्ययपतौ
सुतभावनिरीक्षके ॥ तदपि वर्षफलं यदि
कन्यकाधनलयं कुरुते सुतपीडनम् ॥१२॥

जो पंचम घर का मालिक बारहवें स्थान में बैठा हो बारहवें घर का मालिक पंचम स्थान को देखता हो तो वर्ष का फल कन्या हो धनव्यय और पुत्रों को पीडा हो ॥१२॥

कर्माधिनाथो यदि कर्मभावे धनाधिनाथो यदि
पंचमस्थः॥ तदा नराणां धनधान्यलाभं
शत्रुक्षयं रिष्टहनं च वर्षे ॥१३॥

यदि कर्मस्थान का अधिपति कर्मस्थान में हो और दूसरे घर का मालिक पंचमस्थान में हो तो मनुष्यों को धनधान्य लाभ हो, शत्रुक्षय तथा अरिष्ट भंग हो ॥१३॥

संताननाथो रविमंडलस्थः संतानभावे यदि पापखेटाः॥ तदा च वर्षे धनधान्यनाशं संतानकष्टं कथितं मुनीन्द्रैः ॥१४॥

जो पांचवें घर का मालिक सूर्य के स्थान में हो, पांचवे घर में पापग्रह हों तो उस वर्ष में धनधान्य का नाश, संतान का कष्ट हो, ऐसा मुनिजन कहते हैं ॥१४॥

मृत्युर्निवेशो यदि शत्रुभावे लाभाधिपो लाभगते नराणाम्॥सुतस्य सौख्यं गृहमित्रलाभं प्रघ्नंति वर्षे प्रकरोत्यरिष्टम्॥१५॥

अष्टमस्थान का स्वामी यदि शत्रुभाव में हो लाभस्थान का स्वामी अपने ग्यारहवें स्थान में ही हो तो पुत्र स्त्री मित्रों का लाभ हो तथा दुःख और अरिष्ट हो ॥१५॥

द्युनेशो यदा केन्द्रगो वीर्ययुक्तः शुभैः संयुतो वीक्षितो वांगनानाम् ॥ कलत्रांगसौख्यधनं धान्यलाभं सुपुण्योदयश्शत्रुनाशं करोति।१६।

सातवें घर का स्वामी यदि केन्द्रस्थान में प्राप्त हो, शुभग्रहों से संयुक्त हो; अथवा उस पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तो स्त्री को सुख धनधान्य का लाभ पुण्य का उदय और

शत्रुनाश होता है ॥१६॥

मुंथापतिर्लग्नपतिर्युतश्चेन्मृतिस्थले मृत्युसमं करोति॥ गुह्येन्द्रिये वा रुधिरप्रकोपात्कंठावरोधः कथितो मुनीन्द्रैः ॥१७॥

यदि मुंथापति और लग्नपति एक साथ अष्टम स्थान में स्थित हों तो मृत्यु के समान मनुष्य को कर देते हैं अथवा गुह्येन्द्रिय पीडा, रुधिर का कोप, कंठावरोध होता है यह मुनिजन कहते हैं ॥१७॥

लग्नाधिनाथो यदि कर्मनाथ एको यदि स्यात् किल पंचमस्थः ॥ तदाहि वर्षे धनधान्यलाभं नृपोत्तमैः प्रीति यशोदयं च ॥१८॥

जो लग्नपति और कर्मस्थान के अधिपति यदि एक हों और पञ्चमस्थान में स्थित हों तो वर्ष में धनधान्य लाभ; राजों से प्रीति और यश का उदय हो ॥१८॥

धनस्थितो नीचगृहे सपापे धनाधिनाथो यदि पापयुक्तः ॥ तदा हि वर्षे कुरुते नराणां धनादिचिंता विविधप्रकारैः॥१९॥

धनस्थान में नीचग्रह पापयुक्त स्थित हो ; वा धन का स्वामी यदि पापयुक्त हो तो उस वर्ष में अनेक प्रकार की धनादि चिन्ता रहती है ॥१९॥

स्त्रीराशिनाथो यदि कर्मभावे कर्माधिनाथो

नवपंचमस्थः ॥ तदा हि वर्षे प्रकरोति नूनं निहंति कष्टं कथितं मुनीन्द्रैः ॥२०॥

स्त्रीराशिपति यदि कर्मभाव में स्थित हो और कर्माधिपति नौवें पांचवें स्थान में स्थित हो तो उस वर्ष में अनेक प्रकार के कष्ट दूर होते हैं ऐसा मुनिजन कहते हैं ॥२०॥

मुंथाधिनाथो यदि मृत्युभावे कर्माधिनाथो नवपंचमस्थः ॥ तदाहि वर्षे कुरुतेऽगपीडां सहोदरैर्गुल्मकृतं च कष्टम् ॥२१॥

जो मुंथापति मृत्युभाव में स्थित हो; कर्मपति नौवें पांचवें घर में स्थित हो तो उस वर्ष में अंगपीड़ा, भ्रातृपीड़ा, गुल्मरोग का कष्ट हो ॥२१॥

कन्या सिंहे भास्करे मूर्तिसंस्थे जायाभावे कर्मगे पापयुक्ते ॥ तस्मिन्वर्षे मानवानां च कष्टं भार्यामृत्युर्निश्चितं तत्र वर्षे ॥२२॥

जो कन्या और सिंह के सूर्य मूर्ति में स्थित हों और सप्तम वा कर्मस्थान में पापग्रह युक्त हों तो उस वर्ष में मनुष्यों को कष्ट तथा भार्या की मृत्यु निश्चय हो ॥२२॥

देवार्चिते जन्मनि यत्र राशौ वर्षे स राशिर्यदि पंचमस्थः ॥ तत्र स्थिते वर्षपतौ बुधे वा

भौमेऽथवा पुत्रसमुद्भवः स्यात् ॥२३॥

जो गुरु जन्म में जिस राशिपर हों वर्ष में वह राशि यदि पंचम में हो अथवा उस स्थान में वर्षपति वा बुध हो अथवा मंगल हो तो पुत्र की प्राप्ति हो ॥२३॥

यद्राशिगे जन्मनि सूर्यपुत्रे वर्षे च तद्राशिभवं विलग्नम् ॥ संतानकष्टं च कुजे सुतस्थे विलोमगः पुत्रहरो निरुक्तः ॥२४॥

जन्म से सूर्यपुत्र जिस राशिपर स्थित हो, धर्म में उसी राशिपर हो, वा लग्न में स्थित हो और मंगल पुत्रस्थान में स्थित हो तो वा विलोम हो तो पुत्र का हरनेवाला कहा हैं ॥२४॥

अथ नेत्ररोगः

लग्ने व्यये गते शुक्रे सूर्य भौमसमन्विते ॥
नेत्ररोगं विजानीयात्कथितं च मुनीश्वरैः ॥

जो शुक्र लग्न में अथवा बारहवें स्थान में सूर्य और मंगल के साथ हो तो उस वर्ष में नेत्ररोग हो ऐसा मुनिजनों का कहा है ॥२५॥

धने व्यये गते पापा लग्ने च सप्तमे तथा ॥
न सौम्ययुक्तं दृष्टं हि अंधं दोषं तदा समे ॥

जो पापग्रह धन स्थान बारहवें लग्न में वा सप्तमस्थान में प्राप्त हो और सौम्यग्रह की दृष्टि न हो तो अंधदोष होगा

इसमें सन्देह नहीं ॥२६॥

अथ सुखासनयोगः।

कर्के गुरौ सौख्यगते बलिष्ठे सौम्यैर्ग्रहैर्युक्त निरीक्षते च ॥ लग्नाधिपे कर्मगतेऽत्र वर्षे सुखासनं योगमथामनन्ति ॥२७॥

जो कर्क के गुरु चौथे स्थान में हो, बलवान् हो सौम्य ग्रहों से युक्त हो; वा देखे गये हों और लग्नपति कर्मस्थान में प्राप्त हो तो यह सुखासनयोग है शुभफल देता हैं ॥२७॥

मुंथा सचंद्रो यदि पंचमस्थः संताननाथोऽप्यथ वीर्ययुक्तः ॥ तदा च वर्षे कुरुते नराणां पुत्रोदयः स्यात्कथितं मुनीन्द्रैः ॥२८॥

जो चन्द्रमा मुंथा के सहित पंचमस्थान में स्थित हो और संतान के पति के साथ हो अथवा पंचमस्थान का स्वामी बलवान् हो तो उस वर्ष में अवश्य पुत्र हो यह मुनिजन कहते हैं ॥२८॥

अथाश्वयोगः

षष्ठे चंद्रे जायते भौमयुक्ते कर्मस्थाने देवपूज्ये ससौम्ये॥ तस्मिन्वर्षे मानवानां प्रकुर्य्याद्भूपालेभ्यश्चाश्वलब्धिः सुखं च॥२९॥

जो छठे चन्द्रमा मंगल के सहित और कर्मस्थान में बृहस्पति, सौम्यग्रहयुक्त हों, उस वर्ष में मनुष्यों को राजा से

अश्वादि की प्राप्ति और सुख हो ॥२९॥

कर्माधिनाथे यदि सौम्यखेटे धने सुखे वा सहजालयस्थे ॥ चतुष्पदस्याधिपतिश्च केंद्रे अश्वादिलाभं नृपसन्निधानात् ॥३०॥

कर्मस्थान का स्वामी यदि सौम्यग्रहों के सहित सुख वा तीसरे स्थान में हो तथा चतुष्पद स्थान का स्वामी केन्द्र में हो तो राजा से अश्वादि का लाभ हो ॥३०॥

अथारिष्टयोगाः

वर्षलग्नपकेंद्रेशौ चतुर्थनिधनांत्यगौ ॥ मुंथा वा तद्युता यत्र तद्वर्षे मरणप्रदः ॥३१॥

वर्षलग्नपति केन्द्रपति चौथे अष्टमस्थान में प्राप्त हो और मुंथा भी एक ही स्थान में उन के साथ हो तो उस वर्ष में मरण हो इस में सन्देह नहीं ॥३१॥

यदा सवीर्यो मुथहाधिनाथो लग्नाधिपो जन्मविलग्नपो वा ॥ केंद्रत्रिकोणाय धनस्थितोऽसौ सुखार्थहेमांबरलाभदाः स्युः ॥३२॥

जो मुंथापति भी बलवान् हो, वर्ष लग्न का अधिपति वा जन्मस्थान का लग्नपति केन्द्रत्रिकोण वा धन में स्थित हो तो सुख की प्राप्ति सुवर्ण वस्त्र आदि का लाभ हो ॥३२॥

केंद्रत्रिकोणभवने मुथहाधिपे च लाभे धने भवति चेच्छुभदृष्टियुक्ते ॥ कीर्तिप्रवृद्धिरमला

विमला च कीर्ति राज्यात्सुखं भवति बंधुसुतादिसौख्यम् ॥३३॥

केंद्रत्रिकोणस्थान में मुंथापति हो अथवा लाभ वा धनस्थान में स्थित हो तो कीर्ति की वृद्धि उज्ज्वलकीर्ति राज्य से सुख और बंधु सुत आदि का सुख होता हैं ॥३३॥

यदा छिद्रनाथस्तनुस्थानगो वा तदा लग्न नाथोऽरिभावे यदास्यात् ॥ तदा वर्षमध्ये नराणां च मृत्युर्भवेत्तस्य चायुर्ध्रुवं दैवयोगात्॥३४॥

जो अष्टमस्थान का अधिपति तनुस्थान में प्राप्त हो और लग्न का अधिपति शत्रुभाव में स्थित हो तो उस वर्ष में मनुष्य की मृत्यु हो, दैवयोग से ही उस की आयु हो सकती हैं ॥३४॥

छिद्राधिनाथो रविमंडलस्थो लग्नाधिनाथो यदि नीचगेहे ॥ तदा हि वर्षे तनुसंक्षयः स्याच्छूलादिघातः कथितं मुनीन्द्रैः ॥३५॥

अथवा अष्टमघर का स्वामी सूर्यमंडल में हो और लग्न का अधिपति नीचस्थान में हो तो भी उस वर्ष में शरीर का क्षय शूल का आघात हो ऐसा मुनिजनों ने कहा हैं ॥३५॥

चंद्रे यदा मंदयुतेऽष्टमस्थे लग्नाधिपे वा सहिते च दृष्टम् ॥ तदा च रोगान्कुरुते नराणां

विषूचिकादींश्च गदेन रिष्टम् ॥

जो चन्द्रमा शनि के साथ अष्टमस्थान में स्थित हो और लग्न के अधिपति के साथ हो, अथवा लग्न का अधिपति देखता हो तो मनुष्य को विषूचिकादि अरिष्टरोग हो ॥

लग्नाधिनाथो मृतिभावनाथ एको यदि स्यात्किल तत्र वर्षे ॥ तद्वर्षमध्ये मरणं नराणां सुखे व्यये चाष्टगमेऽरिभावे ॥ ३ ७॥

जो वर्ष में लग्नपति और अष्टमस्थान का अधिपति दोनों एक ही और सुखस्थान बारहवें वा अष्टमस्थान में वा छठे हो तो मनुष्य का मरण अवश्य होता हैं ॥ ३ ७॥

सहजपतिर्यदि सहजे बुधगुरु यदि शुक्र समन्वितौ ॥ सकलारिष्टहरं तदा ग्रहाणां यदि चास्तगृहे विजयस्तदा ॥ ३ ८॥

तीसरे स्थान का स्वामी यदि तीसरे स्थान में हो बुध, गुरु, शुक्र यदि एकस्थान में हो तो ग्रहों का सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होता है जो अस्त अर्थात् सप्तम के हों तो विजय करते हैं ॥ ३ ८॥

मृत्युस्थिते जन्मनि भूमिपुत्रे वर्षे चलाढ्ये दशमं प्रपन्नम् ॥ चतुष्पदात्स्यात्पतनं तथाब्जे तदीक्षिते वा विनिहन्त्यरिष्टम् ॥ ३ ९॥

जो मंगल मृत्युस्थान जन्मस्थान वा दशवें घर में

स्थित हो तो उस वर्ष में चौपाये से चोट लगे, तथा सुखस्थान में हो तो वा चन्द्र की दृष्टि हो तो अरिष्ट दूर होता हैं ॥३९॥

एकोपि जीवबुधसोमभृगुश्च केंद्रे नीचारि भेऽस्तरहिते सहितश्च सौम्ये ॥ उद्दालकादि ऋषिभिर्वचनं प्रयुक्तं सर्वं त्वरिष्टमथ हन्ति तदाहि वर्षे ॥४०॥

यदि एक भी बृहस्पति, बुध, चन्द्रमा, शुक्र, केन्द्र में हो सौम्यग्रह के साथ हों, नीच के न हों, अस्त न हो गये हों तो सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते है ऐसा उद्दालक आदि ऋषियों ने कहा हैं ॥४०॥

छिद्राधिनाथो तनुभावयातो लग्नाधिपश्छिद्र गृहे यदि स्यात् ॥ तद्वर्षमध्ये प्रकरोत्यरिष्टं धने कुटुम्बे स्वजने कुटुम्बे ॥४१॥

जो अष्टमस्थान का स्वामी लग्न में पडा हो और लग्न का स्वामी अष्टम हो तो उस वर्ष में अरिष्ट हो, धन, स्त्री, कुटुम्ब में कष्ट हो ॥४१॥

दैत्येज्यदेवेज्ययुते महीजे, चास्तंगते लग्न परंध्रसंस्थे ॥ चन्द्रान्विते शीतलकादि रोगात्करोत्यरिष्टं खलु तत्र वर्षे ॥४२॥

जो मंगल, शुक्र, गुरु के साथ हों सप्तमघर में हो और लग्न का स्वामी अष्टम में प्राप्त हो, चन्द्रमा संयुक्त हो

तो शीतलादि रोग करता है और अरिष्ट भी है ॥४२॥

वर्षलग्नपरन्ध्रेशौ चतुर्थनिधनांत्यगौ॥ मुथहा तत्रगा यत्र तद्वर्षे मरणप्रदः ॥ लग्ने पापेऽष्टमे पापःसप्तमे पापसंभवः॥ तदा वर्षे विजानीयाच्चोराग्निशस्त्रतो भयम् ॥४३॥

वर्षलग्नपति तथा अष्टमेश चौथे वा अष्टम में हो उसी स्थान में मुंथा हो तो उस वर्ष में मृत्यु हो लग्न अष्टम सप्तमस्थान में यदि पापग्रह हो तो उस वर्ष में चोर, अग्नि, शस्त्र से भय हो ॥४३॥

सुखस्थाने यदा सौरिः कर्मस्थाने क्षितेः सुत॥ स्वस्वामी नीचवक्रास्तो मातापितृक्षयो ध्रुवम्॥४४॥

जो सुखस्थान में शनि, कर्मस्थान में मंगल हो, धन का स्वामी नीच का वक्री होकर अस्त हो गया हो तो मातापिता का अवश्य क्षय हो ॥४४॥

धने व्यये गताः पापा लग्ने च सप्तमे तथा ॥ न सौम्ययुक्तदृष्टं हि आंध्यं भवति निश्चितम्॥४५॥

दूसरे बारहवें पहले सातवें स्थान में पापग्रह हों और सौम्यग्रह की दृष्टि उनपर न हो तो वह प्राणी अवश्य अंधा हो जाय ॥४५॥

अस्तं गते भार्गवदेवपूज्ये नीचस्थितो लग्नपतिर्यदा स्यात् ॥ तदा हि वर्षे कुरुते नराणां शस्त्राग्निघातेन वदंति मृत्युम् ॥

शुक्र और बृहस्पति अस्त सप्तम हो गये हों लग्नपति नीच का हो तो उस वर्ष में शस्त्र तथा अग्निघात से मृत्यु हो ऐसा महात्मा कहते हैं ॥४६॥

लग्नाधिनाथो मृतिभावनाथ एको यदि स्याद्रविमंडलस्थः ॥ न सौम्यकेंद्रे भवती ह वर्षे रिष्टप्रदं सौख्यविवर्जितं च ॥४७॥

जो लग्नपति और अष्टमस्थान का स्वामी एक ही हो और सूर्य के साथ हो, केन्द्र में सौम्यग्रह न हो तो अरिष्ट हो सुख की प्राप्ति न हो ॥४७॥

मुंथाधिनाथो यदि मृत्युभावे छिद्राधिनाथो रविभौमयुक्तः ॥ तदा नराणां कफपित्तरोगौ क्षयोद्भव:स्यात्तनुसंक्षयश्च ॥४८॥

जो मुंथापति अष्टम हो, अष्टमेश रवि मंगल से युक्त हो तो मनुष्य का कफपित्त रोगों से शरीर नष्ट हो इस में संदेह नहीं ॥४८॥

चेल्लग्ननाथो विबलो मृतीशो लग्ने गतो भास्करदृश्यमूर्तिः ॥ शस्त्राभिघातं बहुधा च कष्टं रोगं शरीरे मरणेन तुल्यम् ॥४९॥

जो लग्नेश निर्बल हो, अष्टमेश वर्षलग्न में हो, लग्न को सूर्य देखता हो तो उस वर्ष में शस्त्रघात अनेक कष्ट रोग से प्राणों को मरणतुल्य पीडा हो ॥४९॥

कन्यासंस्थे सप्तमे दुःसरापे लग्ने सूर्ये अष्टमे भार्गवे च ॥ नूनं वान्यत्कामिनीसंगमश्चा कस्माद्दुष्टादात्मजानां च मृत्युः ॥५०॥

सप्तमस्थान में कन्याराशि पर पापग्रह हो लग्न में सूर्य अष्टम में शुक्र हो तो अवश्य स्त्रीसंग वा अकस्मात् सन्तान की मृत्यु हो ॥५०॥

निधनभवननाथो द्रव्यभावे नराणां व्ययभवनपतिर्वा मृत्युभावे यदि स्यात् ॥ तनुभवनपतिः स्यान्निर्बलो जाति वर्षे भुजगदशनमृत्युश्चेश्वरश्चेत्तु रक्षेत् ॥५१॥

जो अष्टमेश द्रव्यस्थान में हो बारहवें स्थान का पति अष्टम हो तनु का स्वामी निर्बल हो तो सर्प के काटने से मृत्यु हो चाहे ईश्वर भी रक्षा करे ॥५१॥

क्रूरान्विते क्षितिसुते मृगगेऽग्निभीतिश्चंद्रान्विते धनसुखं नृपतेर्नराणाम् ॥ सौम्ये च भौमखलदृक्सहितेऽर्धदग्धः संजायते हननमामरणं मृतिस्थे ॥५२॥

जो मंगल क्रूरग्रहों के साथ मकर का हो तो अग्निभय

चन्द्रमा से युक्त हो तो उस मनुष्य को राजा से धन और सुख, और सौम्यग्रह क्रूरग्रहों से दृष्ट अथवा युक्त हो तो अर्ध दग्धता होती है और जब कि, वह अष्टम में स्थित हो तब मरण होता हैं ॥५२॥

भूपुत्रान्वितचन्द्रमा मृतिगतो गुप्तं च दुःखं भवेत्पापैर्दृष्टिवपुःपतिर्निधनगो जीवे च भूपाश्रये ॥ सूर्ये चक्षुरुजं भयं भृगुसुते श्लेष्मादिरोगान्वितः स्यान्मन्दे जलजं भयं मृतिपतौ पापेन दृष्टे मृतिः ॥५३॥

जो मंगल के सहित चन्द्रमा अष्टम हो तो गुप्त दुःख हो लग्नेश पापग्रहों से देखा गया हो वा जीव भृगु अष्टम हो, सूर्य हो तो नेत्ररोग, शुक्र हो तो भय और श्लेष्मादिरोग हो, शनि हो तो जल से भय और अष्टमेश को पापग्रह देखता हो तो मृत्यु हो ॥५३॥

रात्रीश्वरो भास्करमंडलस्थः षष्ठे व्यये वा मृतिभावयाते ॥ त्रिदोषतायाः खलु शंकया च करोत्यरिष्टं प्रवदन्ति सन्तः ॥५४॥

रात्रिपति सूर्य के साथ हो वा छठे बारहवे अष्टम स्थान में हो तो त्रिदोषकी शंका से अरिष्ट हो यह महात्मा कहते हैं ॥५४॥

लग्नाधिपो मृत्युगतेस्तजातः कर्माधिपो वा यदि

शत्रुभावे ॥ धनाधिपो द्वादशगे सवर्षे नरं दरिद्रं प्रवदन्ति सन्तः ॥५५॥

जो लग्नपति मृत्युस्थान में जाकर अस्त हो गया हो कर्मेश छठे हो धनेश बारहवें हो तो मनुष्य को दरिद्र कर देते है ऐसा सब कहते हैं ॥५५॥

लग्नाधिनाथो रविमंडलस्थो लग्ने यदा नीचगते ग्रहे च ॥ व्ययस्थिते बंधुपतौ सचाब्दे करोति मर्त्यं विषजं भयं च ॥५६॥

जो लग्नेश सूर्य के साथ हो अथवा लग्न में नीच का ग्रह हो, सहजपति बारहवें हो तो मनुष्य को विष का भय हो ॥५६॥

नंदे द्वितीये सुगते हिमांशौ पापार्दिते कर्मगते कुपुत्रे ॥ लग्नाधिपे मृत्युगते सवर्षे मृतिर्विषेभ्यः प्रवदन्ति सन्तः ॥५७॥

दूसरे स्थान में शनि पंचम में चन्द्रमा मंगल पापग्रहयुक्त कर्मस्थान में हो लग्नपति मृत्युभाव में स्थित हो तो उस वर्ष में विष से मृत्यु हो यह महात्मा कहते हैं ॥५७॥

कर्मस्थिते सूर्यसुते दिनेशे रंध्रस्थितेच्छिद्रपे चंद्रयुक्ते ॥ जन्माधिपे शत्रुगते सवर्षे करोत्यरिष्टं लकुटप्रहारैः ॥५८॥

जो शनि कर्मस्थान में हो, सूर्य अष्टम अष्टमेश

चन्द्रमा के साथ पडा हो, लग्नेश छठे हो तो लकुट प्रहार से अरिष्ट करते हैं ॥५८॥

लग्ने भौमे पापयुक्तेथ चन्द्रे पुत्रस्थाने जन्मपे मृत्युभावे ॥ मंदे युक्ते क्रूरदृष्टे सवर्षे विद्युत्पातान्मानवानां हि मृत्युः ॥५९॥

लग्न में मंगल पापयुक्त और चन्द्रमा पुत्रस्थान में हो लग्नेश अष्टम हो शनि क्रूरग्रहों की दृष्टि युक्त से हो तो उस वर्ष में बिजली से मृत्यु हो ॥५९॥

कर्माधिनाथो यदि कर्मभावे सौम्यैश्च युक्ते ह्यथवा विलोक्य ॥ लग्नाधिपे केंद्रगते तदब्देऽरिष्टं विनाशं नृपतोऽर्थलाभम् ॥६०॥

जो कर्मेश कर्म में स्थित हो सौम्यग्रहों से युक्त हो अथवा उस को सौम्यग्रह देखते हो लग्नेश केन्द्र में स्थित हो तो अरिष्टनाश तथा राजा से धन मिले ॥६०॥

व्ययेशे वा विलग्नेशे व्ययगे पापसंयुते ॥ पीडास्याद्बहुधादंडाद्व्ययनाशः सदैव हि॥६१॥

बारहवें स्थान का स्वामी लग्नस्थान का स्वामी बारहवें घर में पापग्रह के सहित हो तो दंड से पीडा हो तथा निरन्तर खर्च हो ॥६१॥

जीवे खलाढ्ये च यदाऽष्टमस्थे चंद्रे व्ययस्थे यदि मंदयुक्ते ॥ तदा हि वर्षे धनहानिदंडाद्राज्ञश्च

कष्टं विविधप्रकारैः ॥६२॥

जो अष्टम स्थान में गुरु पापग्रहयुक्त हो चन्द्रमा बारहवें शनियुक्त हो तो उस वर्ष में दंड से धन और राजा से अनेक प्रकार का कष्ट मिले ॥६२॥

कर्माधिपे नीचगतेऽष्टमस्थे कर्मस्थिते पापखगे यदा च ॥ हरंति राज्यं विपुलं नराणां तदा सुखं नाल्पतरं च वर्षे ॥६३॥

जो कर्मेश नीच का अष्टमघर में हो पापग्रह कर्म में स्थित हो तो मनुष्य राजा हो तो भी उस का राज्य हरण हो जाय उस वर्ष में किंचित भी सुख न हो ॥६३॥

रंध्राधिनाथो यदि कर्मसंस्थः कर्माधिनाथो यदि मृत्युभावे ॥ क्रूरैश्च युक्तः कुरुते स वर्षे नृपाद्भयं चार्थविनाशनं च ॥६४॥

अष्टमेश यदि कर्मस्थान में स्थित हो कर्मेश यदि मृत्युभाव में स्थित हो और क्रूरग्रहों से युक्त हो तो राजा से भय और अर्थ का नाश हो ॥६४॥

यत्स्थानगो जन्मनि रात्रिनाथः सराशिलग्न यदि पापयुक्ते ॥ तदा च वर्षे खलु मातृनाशं शरीरकष्टं प्रवदंति संतः ॥६५॥

जिस स्थान में जन्मेश और रात्रिपति हो उस राशि में यदि पापग्रह हो तो उस वर्षमें माता का नाश और शरीर

कष्ट हो ऐसा सन्त कहते हैं ॥६५॥

पापान्विते सौम्ययुतेब्दनाथे षष्ठस्थिते वा विवरोदये च ॥ एवंविधेन्दौ रिपुरंध्रसंस्थे स्यान्मृत्युदः श्लेष्मविकारकृच्च ॥६६॥

जो वर्षपति पापग्रह और सौम्य ग्रहों से युक्त हो, छठे स्थान में स्थित हो वा अष्टम वा तनु (उदय) हो और चन्द्रमा छठे और अष्टमस्थान में स्थित हो तो मृत्यु करनेवाला तथा कफविकार करनेवाला हैं ॥६६॥

इलात्मजे मंदयुते कलत्रे सूर्ये धनस्थेव्ययगे शशांके ॥ तदा नराणां धनधान्यनाशं हर्म्यं च वह्निज्वलितं स वर्षे ॥६७॥

इलापुत्र (भौम) मंद (शनि) के साथ कलत्र ७ स्थान में सूर्य धन में स्थित हो चन्द्रमा बारहवें घर में स्थित हो तो मनुष्यों का धनधान्य नाश हो तथा स्थान में अग्नि लगे ॥६७॥

शनैश्चरे भौमपदस्थिते चेत्पापैश्च युक्ते क्षितिसप्तमस्थे ॥ तदा कलत्रस्य करोति नाशं धनस्य हानिं सततं च मार्गात् ॥६८॥

जो शनैश्चर मंगल के स्थान में हो और मंगल सप्तम स्थान में पापग्रह से युक्त हो तो कलत्रनाश और धन की भी हानि हो मार्ग में व्यय हो ॥६८॥

सप्तमे च यदा पापाश्चाष्टमे शुक्रशीतगू ।। तदा
वर्षे भवेन्मृत्युर्धातुरोगान्न संशयः ।।६९।।

जो सप्तमस्थान में पापग्रह हो अष्टम में शुक्र और चन्द्रमा हो तो उस वर्ष में रोग से मृत्यु हो इस में सन्देह नहीं ।।६९।।

षष्ठाष्टमे च लग्नेशो रंध्रस्थो भौमचंद्रमाः ।।तदा
वर्षे विषान्मृत्युरथवा व्याघ्रदारणात् ।।७०।।

लग्नेश छठे आठवें मंगल और चन्द्रमा रंध्रस्थान में स्थित हो तो उस वर्ष में विष अथवा व्याघ्र के विदारण से मृत्यु हो ।।७०।।

कर्मेशो चास्तगो रन्ध्रे षष्ठस्थे शनिचंद्रमाः ।।
तदा वर्षे नृपान्मृत्युस्तथा चोर्द्ध्वनिपातनात्।।

जो कर्मेश रन्ध्रस्थान में प्राप्त हो कर अस्त हो गया हो शनि चंद्रमा छठे स्थान में हो तो उस वर्ष में राजा से मृत्यु हो अथवा ऊपर से गिरे ।।७१।।

मदननिधनबंधुः पापशत्रुस्थितश्चेज्जनन
समयलग्नाद्रिष्फहाब्देष्टहस्थे ।। खलु गगन
तनुस्थे युक्तदृष्टेरविष्ठं जनपतिशुभदृष्टे
रिष्टकष्टाल्पनास्यात् ।।७२।।

यदि चंद्रमा पापग्रह के सहित शत्रुस्थान में स्थित हो और जन्मलग्न से द्वादशपति वर्ष में अष्टम हो दशमस्थानपति

तनुस्थान में स्थित हो सूर्य की दृष्टि हो तो वा शुभग्रह की दृष्टि हो तो शुभ होता है अरिष्ट कष्ट नही होता ॥७२॥

आपोक्लिमस्था यदि तुर्यसंस्थाः सर्वे ग्रहाः पापशुभा भवंति ॥ तदा भवेद्योग स इंदुवारं कुर्वन्ति दुःखं विविधप्रकारैः ॥७३॥

यदि तीसरे छठे बारहवें नववें स्वामी चौथे घर में हो तो सब पापग्रह शुभ फल देनेवाले हो जाते हैं। यदि इन्दुवार योग हो तो अनेक प्रकार का दुःख और कष्ट होते हैं ॥

रंध्राधिपे केंद्रगते सवीर्ये लग्नाधिपे वा यदि मृत्युभावे ॥ षष्ठे शनिश्चन्द्रयुते सवर्षे करोति कष्टं विविधप्रकारैः ॥७४॥

जो रन्ध्रेश बली केंद्र में प्राप्त हो और लग्न का स्वामी मृत्युस्थान में हो छठे चन्द्रमा शनियुक्त हो तो अनेक प्रकार के कष्ट करते हैं ॥७४॥

लग्नस्थिते रंध्रपतौ सपापे लग्नाधिपे चंद्रयुतेऽष्टमस्थे ॥ तदा हि वर्षे तनुसंक्षयं स्याच्छोकादिरोगेण वदन्ति सन्तः ॥७५॥

जो लग्न में पापग्रह के साथ रन्ध्रेश स्थित हो और लग्नपति चन्द्रमा के सहित अष्टमस्थान में स्थित हो तो उस वर्ष में रोग शोकादि से शरीरक्षय हो ऐसा सन्त कहते हैं ॥७५॥

लग्नाधिपे शुक्र यदाष्टमस्थे क्रूरैश्च युक्तेप्यथवीक्षिते च ॥ लग्ने च भौमैंदुयुते सवर्षे करोत्यरिष्टं कथितं तृर्षातात् ॥७६॥

जो लग्नपति शुक्र अष्टम स्थान में स्थित हो और क्रूरग्रहोंसे युक्त हो वा उस क्रूरग्रहों की दृष्टि हो लग्न में मंगल हो तो तृषा आदि अरिष्ट हों ॥७६॥

जन्मलग्नाब्दलग्नेशो मुंथेशो चास्तगो यदा ॥ तस्मिन्वर्षे ध्रुवं कष्टं क्रूरयुक्तेक्षिते तथा ॥७७॥

जन्मलग्नेश वर्षलग्नेश और मुन्थेश यदि सप्तम हो गये हों तथा उनपर क्रूरग्रहों की दृष्टि हो तो उस वर्ष में अवश्य कष्ट हो ॥७७॥

द्रविणभाग्यपवक्रविधौ सुते तनुपतिर्विबलोपि धनाश्रितः॥ तदपियोगभवो बहुदोष भाङ्मरण तुल्यविनाशमहाधनम् ॥७८॥

धनेश भाग्येश बुध और लग्नेश यह निर्बल होकर यदि धनस्थान में स्थित हो तो यह बहुत दोष करनेवाला योग है यह मरणतुल्य करता है तथा धनका नाशक हैं ॥७८॥

लग्नाधिनाथो यदि मृत्युभावे भौमेक्षिते तस्य च भागसंस्थे ॥ अस्तंगते वा भृगुजे बुधे वा शस्त्राभिघातं बहुधा च कष्टम् ॥७९॥

लग्नेश अष्टम हो और भाग्यस्थान में स्थित मंगल से देखा हो अथवा शुक्र वा बुध के सहित सप्तम में हो तो शस्त्र का आघात और शरीर में कष्ट हो ॥७९॥

सुरारिपुज्ये यदि नीचसंस्थो सुरेश्च पूज्यः परभागवृद्धिः ॥ स्वप्नेति सौख्यं न हि तत्र वर्षे वृथा फलं हायनके तदानीम् ॥८०॥

यदि शुक्र नीचस्थान में स्थित हो और गुरु परभाग उच्च में स्थित हो तो उस वर्ष स्वप्न में भी सुख न हो सम्पूर्ण वर्ष का फल वृथा हो जाता हैं ॥८०॥

भौमग्रहे सप्तमराशिसंस्थे भावेऽष्टमे देवगुरुश्च याते ॥ शुक्राष्टमे चंद्रयुते च वर्षे खल्लासरं योगमुशंति कष्टम् ॥८१॥

यदि मंगल सप्तमराशि में स्थित हो, देवगुरु अष्टमभाव में हो और अष्टम चन्द्रमा के सहित हो तो खल्लासर योग कष्ट का देनेवाला हैं ॥८१॥

गुरौ यदा चाष्टमगे सचंद्रे सौरी सयुक्ता भवतीह मुंथा ॥ सूर्ये बुधे यत्र यदा भवंति तद्वर्षगे याति यमालयं च ॥८२॥

जो बृहस्पति चन्द्रमा के सहित अष्टमस्थान में स्थित और शनि के सहित मुंथा हो तो उस वर्ष में प्राणी की मृत्यु हो ॥८२॥

लग्नाधिनाथो यदि नीचसंस्थो मुंथाधिनाथो रविमंडलस्थः ॥ तस्मिन् हि वर्षे कुरुते नराणां करोत्यरिष्टान्युदरे व्यथा च ॥८३॥

जो लग्न का अधिपति नीचस्थान में हो मुंथापति सूर्यमंडल में हो तो उस वर्ष में अरिष्ट और पेट में व्यथा हो ॥८३॥

केतुश्च युक्ते यदि शीतरश्मिमृत्य्वालये दृष्टिसमुद्भवो वा ॥ तदा हि वर्षे कुरुते नराणां यमालये गच्छति सुंदरीणाम् ॥

जो चंद्रमा केतु के साथ हो और अष्टम में हो वा अष्टम स्थान को देखता हो तो उस वर्ष मनुष्य का मरण हो स्त्री का वियोग हो ॥८४॥

धने व्यये पाप यदा च खेटा मृत्युस्थिते पापयुते च सौम्ये ॥ तदा हि वर्षे कुरुते नराणां वित्तक्षयं धर्मक्षयोपवादः ॥८५॥

जो धनस्थान में बारहवें स्थान में पापग्रह हो, अथवा पापग्रह के सहित सौम्यग्रह अष्टम में स्थित हो तो उस वर्ष में मनुष्योंका वित्तक्षय धर्मक्षय और अपवाद हो ॥८५॥

सूर्यो यदा सप्तमगे च सौरी रंध्राधिपत्या यदि सौरियुक्तः ॥ तदा हि वर्षे सकलार्थनाशं तमो

यथा भास्करदर्शनेन ॥८६॥

जो सूर्य सप्तम में हो और शनि उस के साथ हो, वा रन्ध्रेश शनियुक्त हो तो उस वर्ष में सम्पूर्ण अर्थ का नाश इस प्रकार हो जैसे सूर्य के दर्शन से अंधकार नष्ट हो जाता हैं ॥८६॥

लग्नाधिनाथो यदि कर्मनाथ एकोयदिस्यात्किल यत्र वर्षे ॥ हरंत्यरिष्टं सकलार्थलाभं नृपोत्तमैर्मित्रयशोदयं च ॥८७॥

जिस वर्ष में लग्नेश कर्मेश एक हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट हरतें हैं राजा से लाभ मित्रों से यश की प्राप्ति होती हैं ॥८७॥

विनाशनाथो यदि कंटके स्याद्वपुःपति र्द्वादशगोरिगो वा ॥ चन्द्रे यदा पापयुतेष्टमस्थे करोति नूनं निधनं हि वर्षे ॥

जो अष्टमेश यदि केंद्र में हो लग्नेश बारहवें वा छठे हों चन्द्रमा पापयुक्त अष्टम में हो तो उस वर्ष में निधन होता हैं ॥८८॥

लग्नाधिपे नीचगतेथवास्ते मृत्युस्थिते क्रूरयुते च दृष्टे ॥ उद्वेगचिंतात्वसुखं भयं च निरुद्यमानं खलु रिष्टतुल्यम् ॥८९॥

जो लग्नेश नीच स्थान में प्राप्त होकर सप्तम हो जाय तथा मृत्युस्थान में स्थित क्रूरयुक्त चन्द्रमा हो तो उद्वेग चिन्ता

असुख भय निरुद्यम और अरिष्ट बराबर हो ॥८९॥

चंद्रार्कयुक्ते निधने च भौमे कलत्रगे धर्मगतेऽर्कपुत्रे ॥ तदा हि वर्षे नवमे च मासे करोति कष्टं प्रवदन्ति सन्तः ॥९०॥

जो चन्द्रमा सूर्य से युक्त मंगल निधनस्थान में प्राप्त हो और शनि सातवें अथवा धर्मस्थान में प्राप्त हो तो उस वर्ष के नौवें महीनें में अरिष्ट हो ऐसा सन्त कहते हैं ॥९०॥

सुखस्थिते भूमिसुतेस्तसंस्थे विलोमगे सूर्ययुते च दृष्टे ॥ लग्नाधिपे छिद्रगते च वर्षे घातादिपातेन करोत्यरिष्टम् ॥९१॥

जो मंगल चौथे स्थान में स्थित हो अथवा सप्तम हो जाय तथा विलोमस्थान में प्राप्त होकर सूर्य से संयुक्त हो वा सूर्य की दृष्टी हो और लग्नेश छिद्रमें प्राप्त हो तो घातादि पातसे अरिष्ट हो ॥९१॥

देवेज्ये खलु चास्तगे हिमरुचौसूर्यस्य राशिस्थिते दृष्टे भूमिसुतेन ताजिकमते सौख्यार्थनाशं ततः ॥ कासश्वासकरं तथा ज्वलनकृत्कष्टप्रदं दारुणं मित्रैर्वा कलहं करोति सततं स्त्रीपुत्रकष्टप्रदम् ॥९२॥

देवगुरु निश्चय करके यदि सप्तम में प्राप्त हो और चन्द्रमा सूर्यराशि पर स्थित हो और मंगल उस को देखता

हो तो सुख और अर्थ का नाश हो कास श्वास करनेवाला, विशेष दाहकारक दारुण कष्ट करनेवाला मित्र से क्लेश और स्त्री, पुत्र को कष्ट करनेवाला हैं ॥९२॥

कन्यास्थिते नीचग्रहे गुरुश्च प्रसूतिकाले खलु शत्रुभावे ॥ वर्षे यदा नीचस्थिते फलं च करोत्यरिष्टं निजवर्गमुख्यैः ॥९३॥

जो कन्या में नीच का गुरु स्थित हो, जन्मकाल में हो या शत्रु के घर में स्थित हो तो इस वर्ष में नीच का स्थित होकर अपने वर्ग से अरिष्ट करता हैं ॥९३॥

शरीरकार्श्यं ह्यनलाद्भयं च विरेचनैर्दिदं श्वासकासादिबाधा ॥ सतंद्रा तथा घातपाता दिकष्टं यदाभूसुते चंद्रयुक्तेऽष्टमस्थे ॥९४॥

शरीर में कृशता अग्नि आदि से भय विरेचन आदि से कष्ट श्वासकासादि की बाधा और तंद्रा घातपातादि का कष्ट हो यदि मंगल चन्द्रमा के सहित अष्टमस्थान में स्थित हो तो यह फल हो ॥९४॥

छिद्राधिपे केन्द्रगते त्रिकोणे करोति कष्टं विषबंधनादि ॥ शूलं विरेकावमनं स्वदाहं प्रलापतंद्रां वितनोति नूनम् ॥९५॥

जो रंध्रपति केन्द्र वा त्रिकोण में प्राप्त हो तो कष्ट विष बंधनादि कष्ट करता है शूल विरेक वमन दाह श्वास

प्रलाप तंद्रा निश्चय करके करता हैं ॥९५॥

शरीरकार्श्यं श्वासकासादि कष्टंज्वरार्तिप्रदं मारुताद्गात्रभंगम् ॥ सकृद्बंधनं चांगनानां च कष्टं यदा लग्नगे चंद्रयुक्तेऽर्कपुत्रे ॥९६॥

जो लग्न में चन्द्रमा के सहित शनि हो तो शरीर कृश कासश्वासादि का कष्ट ज्वर वातकोप वायुसे गात्रभंग बंधन स्त्रीजनों को कष्ट हो इस में सन्देह नहीं ॥९६॥

शूलं विरेकावमनादि कष्टं दाहं तथा शीतलकादि रोगम् ॥ घातं तथा धातुक्षयं नराणामारेऽर्कजे चंद्रयुक्तेऽष्टमस्थे ॥९७॥

जो चन्द्रमा और शनि अष्टमस्थान में स्थित हो तो शूल विरेचन वमनादि का कष्ट दाह और शीतलकादि रोग हो घात धातुक्षय आदि अनेक रोग होते हैं ॥९७॥

लग्नाधिपे सौरियुतेऽष्टमस्थे सुखस्थिते वा यदि वक्रयाते ॥ पापैर्विलोक्ये खलु दुष्टपाता त्करोति कष्टं विविधप्रकारैः ॥९८॥

जो लग्नेश शनियुक्त अष्टमस्थान में स्थित हो, सुखस्थान में स्थित वक्री हुआ हो पापग्रह देखता हों तो अनेक प्रकार से दुष्टों से कष्ट हो ॥९८॥

त्रिराशिमुंथा निशिजन्मनाथश्चास्तं गतो ब्दांगपतौ स्वनीचे ॥ तदा च वर्षे सुररक्षितोऽ

पि प्राप्नोति नूनं निधनं मनुष्यः ॥९९॥

त्रिराशीश मुंथेश जन्मलग्नेश यह अस्त सप्तम को प्राप्त हो वर्षपति नीच का हो तो यदि देवता भी रक्षा करे तथापि मनुष्य उस वर्ष में निधन को प्राप्त होते हैं ॥९९॥

छिद्राधिपे मृत्युगते बलिष्ठे लग्नाधिपे चास्तगते हि वर्षे ॥ शूलं विरेकं वमनं च दाहं प्रलापतंद्रादि करोति कष्टम् ॥१००॥

जो रन्ध्रेश मृत्यु भाव में प्राप्त बलिष्ठ हो और लग्नपति सप्तम में प्राप्त हुआ हो तो शूल दस्त वमन दाह प्रलाप तंद्रा का कष्ट उस वर्ष में होता हैं ॥१००॥

लग्ने च राहुस्सुतगेऽर्कपुत्रे लग्नाधिप चंद्रयुतेऽष्टमस्थे ॥ तदा च वर्षे पवनादिपीडा गुल्मादिरोगेन भवेच्च मृत्युः ॥१०१॥

जो लग्न में राहु सुतस्थान में शनि लग्नेश चन्द्रमा के सहित अष्टम स्थान में स्थित हो तो उस वर्ष में पवनादि पीडा और गुल्मादि रोग से मृत्यु हो ॥१०१॥

चतुर्थे भवने पापाश्चष्टम व्ययगे तथा ॥ आम्वातकफश्वासशरीरेकृशमादिशेत्॥१०२॥

जो पापग्रह चौथे आठवें बारहवें हो तो आमवातकफ श्वास से शरीर में कृशता हो ॥१०२॥

अष्टमस्थे यदा भौमे षष्ठे भवति चन्द्रमाः ॥

वर्षे तदोदयेशत्रुः शत्रुतःपातघातकम्॥ १ ० ३ ॥

जो मंगल अष्टम हो छठे चन्द्रमा हो तो उस वर्ष में शत्रु का उदय और शत्रु से घातपातादि हो ॥१०३॥

लग्नेशे यदि नीचस्थे लग्ने नीचग्रहे युते ॥ तदा शरीरे पीडास्यादथवा स्त्रीसुते तथा ॥ १ ० ४॥

लग्नेश नीच का लग्न में स्थित नीच के ग्रह से युक्त हो तो शरीर में अथवा स्त्री पुत्र में पीडा हो ॥१०४॥

निधनलग्नमदान्त्यविधुर्यदि कुजशनिर्युग वर्गगतःसितः ॥ विविधशस्त्रभयं ज्वरपीडनं तनुक्षयं कुरुते कफमारुतः ॥१ ० ५॥

यदि अष्टम चन्द्रमा हो वा मंगल शनि के सहित हो चन्द्र वर्ग में हो तो अनेक शस्त्र से स्वर पीडा वात कफ से शरीर को क्षय करता हैं ॥१०५॥

लग्नाधिनाथोऽष्टमभावनाथ एको यदि स्यात्किल यत्र वर्षे ॥ तदा हि वर्षे प्रकरोति कष्टं विषाग्निपीडारुधिरप्रकोपम् ॥१ ० ६॥

जो लग्नेश अष्टमेश एक ही हो तो उस वर्ष में विष अग्नि पीडा और रुधिर का कोप करते हैं ॥१०६॥

भ्रातुर्निवेशो यदि शत्रुभावे सौम्यग्रहैर्युक्त निरीक्षते च ॥ तदा च वर्षे प्रकरोति वैरं मित्रात्मवर्गे कलहो नितान्तम् ॥१ ० ७॥

जो तीसरे स्थान का अधिपति शत्रुभाव में हो सौम्यग्रहों से युक्त हो अथवा उस को सौम्यग्रह देखते हों तो उस वर्ष में मित्र तथा आत्मीयजनों से क्लेश होता है और कलह अधिक होता हैं ॥१०७॥

रंध्राधिनाथो यदि लग्नवर्ती तनुक्षयं वातकफोद्भवाच्च ॥ गुह्येन्द्रिये पादमुखादिपीडा कंठावरोधं कथितं मुनीन्द्रैः ।१०८।

जो रन्ध्रेश लग्न में हो तो वात और कफ से शरीरक्षय होता है तथा गुह्येन्द्रिय पाद मुखादि में पीडा कंठ का अवरोध होता है ऐसा मुनिजन कहते हैं ॥१०८॥

सहजगे क्षितिनंदनवर्षपे भवति केतुयुते बहुकष्टदा ॥ सहजवैरकृतं च रिपूदयं विविधवायुभयं कथितं नरम् ॥१०९॥

जो वर्षपति और मंगल सहजस्थान में प्राप्त हो और केतु के सहित हो तो बहुत कष्ट के देनेवाले हैं स्वाभाविक वैर करनेवाले शत्रु उदय करानेवाले तथा अनेक प्रकार से वात का भय करनेवाले हैं ॥१०९॥

नवांशवर्षाधिपतिर्नवांशे षष्ठेष्टमे मृत्युगते नराणाम् ॥ बन्धोःशरीरे समुपैति कष्टं क्लेशं विवादं कुरुते नराणाम् ॥११०॥

जो नवांशवर्ष का अधिपति नवांश में हो अथवा छठे

आठवें स्थित हो तो बंधु के शरीर में कष्ट क्लेश और विवाद भी करनेवाला हैं ॥११०॥

लग्नाधिनाथो यदि पंचमस्थे सौम्यैश्चयुक्तौ यदि वीक्षितो वा ॥ हरंत्यरिष्टं सकलं नाराणां तथापि चास्तं यदि नीचखेटाः ॥

जो लग्नेश पंचमस्थान में हो सौम्यग्रहों से युक्त हो वा जिसको सौम्यग्रह देखते हों तो मनुष्यों का सम्पूर्ण अरिष्ट दूर हो जो सप्तम नीच के ग्रह पडे हों तो भी यह फल हों ॥१११॥

त्रैलोक्यताजिके

लाभाधिपे बलयुते धनगे च चन्द्रे जन्माधिपेन सहितेन निरीक्षितेन ॥ रन्ध्राधिपेप्यबलगे यदि तत्र वर्षे चान्यत्कृतं हरति रिष्टगुणं सवर्षे ॥११२॥

जो लाभेश बली हो चन्द्रमा धन स्थान में हो तथा जन्मपति के सहित हो वा देखता हो और रन्ध्रपति निर्बल हो तो उस वर्ष में अन्यग्रहों का किया हुआ सब अरिष्ट दूर होता हैं ॥११२॥

ताजिकलतायाम्

नीचस्थितो जन्मनि यद्ग्रहश्च तद्वर्षगे भवति

चाष्टमयत्रभावे ॥ सौख्यप्रदं धनप्रदं बहुलं विलासं मित्रागमं सकलरिष्टहरंति वर्षे ॥

जो ग्रह जन्म में नीच की स्थित हो वही ग्रह वर्ष में अष्टम भाव में प्राप्त हो तो सुख देनेवाला धन देनेवाला अनेक सुख मित्र की प्राप्ति करने वाला तथा सब अरिष्ट हरता हैं ॥११३॥

वामनताजिके

लग्नाधिनाथो यदि केन्द्रगो वाप्युच्चर्क्षगो वा यदि मित्रदृष्टः ॥ राजाधिराजं किल योगजातं धनप्रदं बाहुबलप्रतापम् ॥११४॥

यदि लग्न का स्वामी केंद्र में हो अथवा उच्चग्रह होकर केंद्र में स्थित हो और यदि लग्नस्वामी या उच्चग्रह होकर मित्र देखता हो तो इस योग से राजा को सार्वभौमपद प्राप्त होवें अथवा साधारण मनुष्य बडा धनवान् और अपने भुजबल से प्रतापवान् होगा ॥११४॥

समुच्चयताजिके

रन्ध्रालयस्था यदि पंचखेटा ह्यष्टाधिकं वा यदि नीचयुक्ताः ॥ तदा च वर्षे प्रकरोति कष्टं वज्राहतं वा प्रवदन्ति सन्तः ॥११५॥

जो रन्ध्रस्थान में पाँच ग्रह स्थित हो अथवा छः से अधिक नीच युक्त हो तो उसवर्ष में वज्रसे हत होने का कष्ट

हो ऐसा सन्त महात्मा कहते हैं ॥११५॥

ताजिकलतायाम्।

लग्नाधिपे केन्द्रगते बलिष्ठे सौम्ये क्षिते वा सहिते च वर्षे ॥ धनं च लाभं खलु रिष्टनाशं गुप्तस्य सौख्यं कथितं मुनीन्द्रैः ॥११६॥

जो लग्नपति बलिष्ठ होकर केन्द्र में प्राप्त हुआ हो, सौम्यग्रह उस को देखता हो, वा सौम्य युक्त हो तो धनलाभ अरिष्टनाश गुप्त सुख हो ऐसा सन्त कहते हैं ॥११६॥

वर्षाधिपे शशिसुते यदि मृत्युभावे सूर्यात्मजेवनिसुते द्युगते सपापे ॥ चन्द्रेक्षिते वा मरणं नराणां कंठादिरोगवमनं प्रवदन्ति सन्तः ॥११७॥

जो वर्षेश और बुध अष्टम हो तथा शनि मंगल पापग्रहसहित सप्तस्थान में प्राप्त हो चन्द्रमा की दृष्टि हो तो मनुष्य का मरण हो कंठादिरोग और वमन हो ऐसा सन्त कहते हैं ॥११७॥

ताजिकसमुच्चये।

यदींथिहेशो निजभाग्यवर्ती स्वोच्चंगतोमित्र शुभैश्च दृष्टः ॥ ददाति लक्ष्मीं गजहेम रत्नप्रवालकादिं खल्वरिष्टनाशम् ॥११८॥

जो मुंथापति भाग्यस्थान में हो उच्चस्थान में प्राप्त हो मित्रग्रह तथा शुभग्रहों की दृष्टि हो तो लक्ष्मी, हाथी, सुवर्ण, रत्न, प्रवलादि की प्राप्ति और अरिष्ट का नाश होता है ॥११८॥

तनौ यदा रंध्रगतेर्कपुत्रे वर्षेशराशौ यदि मृत्युभावे ॥ सौरेण युक्तो कुरुते नराणां भुजंगमस्पर्शनतश्च कष्टम् ॥११९॥

जो सूर्यपुत्र शनि तनुस्थान को अथवा रंध्रस्थान में प्राप्त हो और वर्षेश भी मृत्युस्थान को प्राप्त होकर शनि के साथ हो तो मनुष्य को सर्पस्पर्श का कष्ट हो ॥११९॥

सुखाधिपे सौम्यगते बलिष्ठे लग्नाधिपे लाभपतिप्रयुक्ते ॥ तदा च वर्षे गजवाजिलाभं शरीरसौख्यं विविधप्रकारैः ॥१२०॥

जो सुखेश सौम्यग्रह के साथ बलिष्ठ हो और लग्नेश लाभेश एकस्थान में प्राप्त हो तो वर्ष में हाथी घोडों के लाभ और शरीर में अनेक प्रकार का सुख हो ॥१२०॥

मंदो यदा चन्द्रपदे मृगांकश्चेन्नक्रराशौ खलु पापयुक्ते ॥ लग्नाधिपे मृत्युगते सवर्षे करोति कष्टं हि जलोदरं च ॥१२१॥

जो शनि चन्द्रमा के स्थान में हो और चन्द्रमा मकरराशि में पापयुक्त हो और लग्नेश अष्टम हो तो कष्ट

और जलोदर करता है ॥१२१॥

लाभाधिपे लग्नगतेब्दपेशो लाभस्थिते वा यदि सौम्ययुक्ते ॥ उभौ नभस्थे कुरुते हि वर्षे हरत्यरिष्टं कथितं मुनीन्द्रैः ॥१२२॥

जो लाभेश लग्ने में प्राप्त हो वर्षेश सौम्यग्रह के सहित लाभ में स्थित हों वा दोनों दशमभावमें स्थित हों तो अरिष्ट हरते हैं ऐसा मुनिजन कहते हैं ॥१२२॥

सकलकेंद्रगताश्च शुभैर्युता अरिगता व्ययभावविवर्जिताः ॥ धनमथो बहुलं कुरुते सुखं प्रतिदिनं रमणीसुखमेव च ॥१२३॥

जो शुभग्रह शुभ के साथ केन्द्र में प्राप्त हुए हों और छठे में प्राप्त हुए व्ययभाव से वर्जित हों तो धन और बहुत सुख के करनेवाले हैं, तथा अनेक सुख और स्त्रीविलास के सुख से समय व्यतीत कराते हैं ॥१२३॥

सहजभाव

सहजभावपतिः सहजस्थितो बुधगुरु यदि शुक्रसमन्वितौ ॥ सकलरिष्टहरं ग्रहकोद्भवं यदि तथास्तगृहं च जयं कुरु ॥१२४॥

जो सहजस्थान में बुध गुरु शुक्र के साथ स्थित हों तो ग्रहों से हुए सम्पूर्ण अरिष्ट को दूर करते हैं यदि सप्तम में हों तो भी जयकारक हैं ॥१२४॥

जन्मन्यब्दे तूर्यभावे सपापे दग्धेऽरिष्टं चिन्तनीयं हि पुत्रैः ॥ तद्वत्सूनौ तुर्यनाथान्वितं भं वर्षे मंदारान्वितं स्यात्फलं तत् ॥१२५॥

जो वर्षलग्न में वा जन्मलग्न में चौथे भाव में पापग्रह हो तो उस समय पुत्रों को अरिष्ट हो इसी प्रकार पुत्रस्थान चौथे स्थान के स्वामी के साथ हो तो वर्ष में मंदफल हो ॥१२५॥

द्यूनस्थिते सप्तमभाववर्जे खलैर्हतः स्त्रीतनुजप्रवादः ॥ शनैश्चरो वा यदि पञ्चमस्थस्तदापवादो विषयान्तरे स्यात् ॥

जो ग्रह सप्तमस्थान में स्थित सप्तमभाव से वर्जित हो क्रूरग्रह हो तो स्त्री पुत्रों में आवाद हो और शनि पांचवा हो तो क्लेश अपवादादि की प्राप्ति हो ॥१२६॥

यदि सुखाधिपतिः खलु केंद्रगतः प्रसवलग्नपतिर्हिबुकाश्रितः ॥ धनसुखं विविधं क्षितितो लभेत्सुतसुखं यदि सौम्यसमन्वितः ॥१२७॥

जो सुखेश केन्द्रस्थान में हो जन्मलग्नपति हिबुक (चौथे) स्थान में हो तो राजा से अनेक प्रकार का धन और सुख प्राप्त हो और यदि उपरोक्त ग्रह चन्द्रमा के सहित हो तो पुत्र का भी सुख हो ॥१२७॥

पंचमस्थो यदा शुक्रो भौमयुक्तो निरीक्षितः ॥
तदा वर्षे विजानीयाद्गर्भे पुत्रसमुद्भवः ।१२८।

जो शुक्र पंचमस्थान में मंगल के साथ निरीक्षण किया गया हो तो उस वर्ष में पुत्र की प्राप्ति जाननी ॥१२८॥

सुते सुखायान्त्यकलत्रनाथोब्दे छिद्रगा क्रूरयुतेक्षिते च ॥ मृत्युप्रदोऽथार्कजइन्दुदृष्टो व्ययारिगे मृत्युप्रदत्रिदोषात् ॥१२९॥

जो सातवें स्थान का अधिपति सुखस्थान वा पञ्चम में हो अष्टम में क्रूरग्रहों के साथ हो या क्रूरग्रहों की दृष्टि हो तो मृत्युयोग है अथवा शनि चन्द्रमा अष्टम छठे बारहवें हो तो त्रिदोष से मृत्यु हो ॥१२९॥

व्ययालये वा मदनालये वा खलेषु बुधया लयगे हिमांशौ ॥ कलत्रहीनो मनुजस्त्रू जैर्विवर्जितस्यादिति वेदितव्यम् ॥१३०॥

जो बारहवें स्थान में सप्तमस्थान में वा बुद्धि के स्थान पंचम में क्रूरग्रहों के साथ चन्द्रमा हो वा मंगल हो तो कलत्र का वियोग हो ऐसा जानना चाहिये ॥१३०॥

सुखपतिस्सबलश्च सुखानुगो बुधसुरेज्य सुतैर्युत वीक्षितः ॥ स विदधाति सुखं विपुलं धनं हरति रिष्टगणं कथितं बुधैः ॥१३१॥

जो सुखेश बलिष्ठ और सुखस्थान में प्राप्त हो बुध

गुरु के साथ देखा गया हो तो सुख और धन बहुतसा प्राप्त हो और संपूर्ण अरिष्ट दूर हो यह महात्माओं का कथ्र हैं ॥१३१॥

दैत्येज्ये स्वपदे विवाहजसुखं कष्टं कुजे योषितां द्रव्यस्थो रविजः करोति कलहं स्वस्थो रविः क्लेशकृत् ॥ सौम्याः सप्तमगा बलेन सहिताः कुर्युस्सुखं योषितां दुष्टाः स्वल्पसुखं शशांक सहिताः स्त्रीतो हि वश्यं नृणाम् ॥१३२॥

जो शुक्र अपने स्थान में स्थित हो तो विवाह का सुख मंगल हो स्त्री का कष्ट, धनस्थान में शनि हो तो क्लेश और रवि हो तो क्लेशकारी है जो सौम्यग्रह सप्तमस्थान में बलवान् हो तो स्त्रियों का सुख हो जो चन्द्रमा के साथ क्रूरग्रह हो तो थोडा सुख तथा मनुष्य स्त्री के वशीभूत हो ॥१३२॥

अब्दाधिनाथे स्वगते बलिष्ठे सौम्यान्विते स्यान्नृपतोर्थलाभम् ॥ शरीरसौख्यं मनसि प्रहर्षं रथादि लाभं भवतीह वर्षे ॥१३३॥

जो वर्षेश दशमस्थान में प्राप्त और बलवान् हो तथा सौम्य ग्रहों से युक्त हो तो राजा से अर्थलाभ हो शरीर में सुख मन में प्रसन्नता तथा इस वर्ष में रथादि का लाभ हो ॥१३३॥

लग्नाच्चाष्टमगे कुजे विधुयुते स्यान्मृत्यु

कृच्छस्त्रतो मन्दारौ यदि चाष्टगौ हिमरुचिर्वा लग्नतोऽरिष्टकृत् ॥ मुंथामृत्युगता खलैर्यदि युता नो जीवदृष्ट्यार्तिदा सूनौ चाष्टमगा तथा खलखगैर्युक्तेक्षिता मृत्युकृत् ॥१३४॥

जो चन्द्रमा के सहित मंगल अष्टम हो तो शस्त्र से मृत्यु हो शत्रु के घर में शनि हो वा लग्न से चंद्रमा अष्टम हो तो अरिष्ट करनेवाला है, जो मुंथा क्रूरग्रहों के साथ मृत्युस्थान में प्राप्त हो बृहस्पति न हो तो दृष्टि को कष्ट होता है तथा सुतस्थान वा अष्टम में प्राप्त हो खल ग्रहों से युक्त हो वा देखते हों तो मृत्युकारक हैं ॥१३४॥

मंदे यदा मंदपदेष्टमस्थे तुर्यस्थिते पापयुते गृहे च॥ पापेन युक्ते प्रकरोत्यरिष्टं भृत्यादिघातेन वदंति सन्तः ॥१३५॥

जो शनि मंदपद अष्टम स्थान में हो चौथे स्थान में पापग्रहों से युक्त हो तो अरिष्ट और मृत्यु आदि का घात हो यह सन्त कहते हैं ॥१३५॥

सहोत्थपे बंधुगते त्रिकेन्द्रे सौम्येक्षिते चाग्निकृतं हि वर्षे ॥ पापास्त्रिषष्ठैकगताश्च वर्षे कुर्वंति सौख्यं निजबंधुवर्गात् ॥१३६॥

सहजपति के सहज स्थान में प्राप्त होने में तथा त्रिकोण केन्द्र में प्राप्त हो शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो भी

अग्निभय हो और तीसरे छठे पापग्रह हो तो बंधुवर्ग से सुख हो ॥१३६॥

ताजिकसमुच्चये

षष्ठाष्टमे वर्षकाण्डे भवतो रविशीतगू ॥ पापयुक्तौ तदा मृत्युर्गजदोषो न संशयः ॥१३७॥

जो वर्ष में सूर्य और चन्द्रमा छठे वा आठवें हों तथा पापग्रहयुक्त हो तो मृत्यु गजदोष से हो इस में संदेह नहीं ॥१३७॥

दशमभावगते यदि भूसुते सुखगते सुरनायक संयुते ॥ तनुगते यदि तुंगरवेर्यदा सकलपार्थिवपूजितविक्रमः ॥१३८॥

यदि मंगल दशमभाव को प्राप्त हो बृहस्पति चतुर्थ हो, और तनुस्थान में उच्च के सूर्य हों तो सब राजा उस के पराक्रम की बडाई करें ॥१३८॥

यवनताजिके

सहजभावपती रिपुभावगो रिपुपतिस्सहजर्क्षपसंयुते ॥ तदिह वर्षगते स्वकबन्धुतो भवति शस्त्रहते शिरसः क्षतिः ॥१३९॥

जो सहजस्थान का अधिपति शत्रु के घर में प्राप्त हो शत्रुपति सहजस्थान (तृतीय) में प्राप्त हो तो इस वर्ष में भ्राता

से शस्त्रद्वारा शिर में आघात होगा ॥१३९॥

केंद्रस्थिते देवगुरौ बलिष्ठे सौम्यग्रहे युक्तविलोकिते वा ॥ तदा च वर्षे धनधान्य लाभं प्रयात्यरिष्टं त्वरया विनाशम् ।१४०।

जो गुरु केन्द्र में स्थित और बलिष्ठ हो अथवा उसपर सौम्यग्रहकी दृष्टि हो तो उस वर्ष में धनधान्य का लाभ और लग्न का किया अरिष्ट नाश हो ॥१४०॥

लाभे तृतीये यदि सैंहिकेयः सौम्यैश्च युक्ते अथवा विलोके ॥ तदा च रिष्टं कुरुते विनाशं लग्नोद्भवं वा मुथहाकृतं वा ॥१४१॥

जो ग्यारहवें अथवा तीसरे राहु हो सौम्यग्रह से युक्त हो वा उस को सौम्यग्रह देखता हो तो लग्न वा मुंथा का किया अरिष्ट नष्ट होता है ॥१४१॥

लग्ने व्ययगते शुक्रे सूर्यभौमसमन्विते ॥ नेत्ररोगं विजानीयात्कथितं हि मुनीश्वरैः ॥१४२॥

जो शुक्र लग्न में अथवा बारहवें सूर्य मंगल के साथ हो तो उस वर्ष में नेत्ररोग हो ऐसा मुनिजन कहते हैं ॥१४२॥

मुंथाधिनाथस्सहजेन युक्तः सौम्येन युक्तश्च निरीक्षितश्च ॥ तदा च वर्षे खलु रिष्टनाशं मदालये सूर्यनिरीक्षिते च ॥१४३॥

जो मुंथापति सहजस्थान में युक्त हो और सौम्यग्रहों से युक्त हो वा सौम्यग्रहों की उस पर दृष्टि हो तो यदि सप्तमस्थान में सूर्य हो तो अरिष्ट नाश हो ॥१४३॥

हद्देश्वरो हायनलग्ननाथः सप्ताष्टक क्रूरयुतं करोति ॥ मृत्योर्दशायां शुभदृष्टयुक्तः फलं तदार्धं प्रतिमं करोति ॥१४४॥

जो हद्दा (दशाका) स्वामी वर्षलग्न का स्वामी सातवें आठवें क्रूरग्रहों के साथ हो तो मृत्युवत् कर देता है और शुभग्रह की दृष्टि हो तो उस का आधा फल होता है ॥१४४॥

कर्कगुरौ सौख्यगते बलिष्ठे सौम्यग्रहे युक्त निरीक्षिते च ॥ लग्नाधिपे लग्नगते सवर्षे सुखासनं योगमुशंति सन्तः ॥१४५॥

जो कर्क के गुरु सुखस्थान में प्राप्त तथा बलिष्ठ हो तथा सौम्यग्रह से युक्त हो वा सौम्यग्रह उस को देखता हो और लग्नेश लग्न में प्राप्त हो तो महात्माओं ने यह सुखासन योग कहा है ॥१४५॥

लग्नाधिपे रंध्रगते च भौमे रंध्राधिनाथे व्ययगे रिपुस्थे ॥ करोत्यरिष्टं द्विषतां विवादे भृत्यादिघातेन करोत्यरिष्टम् ॥१४६॥

लग्नेश और मंगल रन्ध्र में हो रन्ध्रेश बारहवें अथवा छठे हो तो अरिष्ट शत्रुविवाद और भृत्यादि का घात होता

है ॥१४६॥

लग्नाधिपे भवति भौमगते च कर्मे कर्माधिपे भवति केंद्र अथो त्रिकोणे ॥ सौम्येक्षिते प्रकुरुते निजवंशमध्ये तुल्यं नृपं धनचयं प्रवदन्ति सन्तः ॥१४७॥

जो लग्नेश मंगल के साथ कर्मस्थान में प्राप्त हो, कर्मेश केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो, सौम्यग्रह उस को देखता हो तो वंश में राजा के तुल्य धनागम हो ॥१४७॥

तृतीये च शुक्रे गुरुर्धर्मचारी विधुर्मंदयुक्तो यदा लग्नवर्ती ॥ प्रसूतेश्च वृद्धिर्महत्कीर्तिलाभं तदारिष्टनाशं च शक्रस्य तुल्यम् ॥१४८॥

शुक्र तीसरे, धर्मस्थानमें गुरु, लग्नमें शनियुक्ति चन्द्रमा हो तो सन्तानवृद्धि महान् कीर्तिलाभ अरिष्टनाश और इन्द्रतुल्य पराक्रम हो ॥१४८॥

जन्मपे गुरुयुते च कंटके लाभनाथसबले विलोकिते ॥ तत्समं सकलरिष्टविनाश मंधकारमिव भास्करोदयात् ॥१४९॥

जो जन्मपति गुरुसहित केन्द्रस्थान में हो, लाभेश बली देखता हो उस वर्ष के सब अरिष्ट इस प्रकार नाश हो जाते हैं जैसे सूर्योदय से अंधकार ॥१४९॥

कन्यालग्ने भार्गवे मूर्तिसंस्थे जायाभावे चार्कजे

पापयुक्ते ॥ तस्मिन्वर्षे मानवानां हि कष्टं भार्यामृत्युर्निश्चितं तत्र वर्षे ॥१५०॥

कन्यालग्न का शुक्र मूर्ति में स्थित हो स्त्रीभाव में शनि पापग्रहयुक्त हो उस वर्ष में मनुष्योंको कष्ट और भार्या की मृत्यु अवश्य हो ॥१५०॥

कर्मस्थाने भार्गवे सोमपुत्रे मूर्तौ भावे देवपूज्ये सचंद्रे ॥तस्मिन्वर्षे भूपतेश्छत्रयोगः प्रज्ञा चैवं सिंधुपर्यंतसेतुः ॥१५१॥

जो कर्मस्थान में शुक्र बुध के साथ हो मूर्तिभाव में गुरू चन्द्रमा के सहित हो उस वर्ष में राजा से छत्रयोग है उसकी बुद्धि का सर्वत्र प्रकाश हो ॥१५१॥

समाधिपे केंद्रगते बलिष्ठे सप्तांगनाथोऽथ तदुच्चनाथः ॥ केंद्रस्थिते सौम्ययुतेर्थलाभं रिष्टं विनाशं सुखमिंद्रतुल्यम् ॥१५२॥

जो वर्षलग्नपति केद्रमें प्राप्त और बलिष्ठ हो और सप्तमेश उच्च लग्न का स्वामी केन्द्र में स्थित सौम्यग्रहों के साथ हो तो अर्थलाभ अरिष्ट नाश और इन्द्र के तुल्य सुख प्राप्त होता हैं ॥१५२॥

समाधिपो वा तनुनायको वा वीर्याधिक श्चेच्छुभखेटयुक्तः ॥ पश्येद्विलग्नं किल तत्र वर्षे स्याच्छोभनं रिष्टविनाशनं च ॥१५३॥

जो वर्षलग्न का स्वामी वा लग्नेश अधिक बली शुभग्रहों से युक्त हो और विलग्न को उस वर्ष में देखता हो तो अच्छा है और अरिष्ट का नाशक हैं ॥१५३॥

मुंथाधिनाथो यदि केन्द्रसंस्थो लग्नाधिपे कर्मगते बलिष्ठे ॥ द्यूनस्थिते कर्मपतौ सवर्षे मुन्थाकृतं रिष्टहरश्च नूनम् ॥१५४॥

जो मुंथापति केन्द्र में स्थित हो, लग्नेश कर्म में प्राप्त और बलवान् हो कर्मेश सप्तम में स्थित हो तो मुंथा का किया सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं ॥१५४॥

धीस्थानस्थे कर्मगे भूमिपुत्रे क्रूरैर्युक्ते वीक्षिते वा तदाब्दे ॥ लग्नस्वामी रंध्रगश्चोर्ध्वपातं नूनं रिष्टं मानवानां च तस्य ॥१५५॥

बुद्धि के स्थान पंचम तथा कर्मस्थान में मंगल क्रूरग्रहों के साथ हो वा क्रूरग्रह देखते हों लग्नेश रन्ध्रस्थान में प्राप्त हो तो मनुष्यों को अरिष्ट हो उर्ध्वपात हो ॥१५५॥

कर्माधीशे कर्मगे सौम्ययुक्ते लग्नाधीशे केंद्रसंस्थे तदानीम् ॥ रिष्टं नाशं भूपवर्गाच्च लाभं शत्रोर्नाशं चांगनानां सुखं च ॥१५६॥

जो कर्मेश कर्मस्थान में प्राप्त हो सौम्यग्रहयुक्त हो और लग्नेश केन्द्र में स्थित हो तो अरिष्टनाश राजपक्ष से लाभ शत्रु का नाश तथा स्त्रीजनों का सुख हो ॥१५६॥

जन्मलग्नपतौ वर्षगेऽष्टमे क्रूरयुक्तेऽथ वा विलोकिते ॥ मृत्युव्ययाय रसाष्टमे स्थिते शस्त्रघातकृते खल्वब्दके ॥१५७॥

जो जन्मलग्न का स्वामी वर्ष में अष्टम हो क्रूरग्रह से युक्त हो अथवा क्रूरग्रह देखते हों, तथा व्यय १२ और अष्टम स्थान को देखते हो तो उस वर्ष में शस्त्रघात से मृत्यु हो ॥१५७॥

सुखे यदा नीचगतेंद्रपूज्ये सुखाधिपे नीचगते कलत्रे ॥ लाभाधिपे मृत्युगते हि वर्षे करोत्यरिष्टं च चतुर्थमासे ॥१५८॥

जो बृहस्पति चौथे हों और सुखेश नीच का सप्तम स्थान में प्राप्त हो और लाभेश अष्टम हो तो चौथे महीने में अरिष्ट करता हैं ॥१५८॥

प्रसूतिकाले खलु जन्मलग्नं सवर्षगे लग्नगतं नराणाम् ॥ कर्मोदयं बाहुबलं प्रतापं दुष्टैः कृतं कष्टभयं विनाशम् ॥१५९॥

जो जन्मलग्न और वर्षलग्न जो एक ही हो जाय तो उस वर्ष में कर्म का उदय अनेक प्रताप बाहुबल का उदय और दुष्टों के किये भय का नाश हो ॥१५९॥

जन्मलग्नपति वर्षलग्नतः कंटकाय नवपंचमे गतः ॥ रिष्टयोगसकलं खलु नाशं धर्मकर्म

कुरुते बहु पुंसाम् ॥१६०॥

जो जन्मलग्न का पति वर्षलग्न से केन्द्रस्थान अथवा नववें और पांचवें स्थान में प्राप्त हो तो सब अरिष्टयोग का नाश और धर्मकर्म की प्राप्ति करता हैं ॥१६०॥

जायाभावपतिस्तथा सुखपतिर्लग्नेऽथवा सप्तमे सौम्ये खेटविलोकिते च सहिते शृङ्गारयोगप्रदः॥ स्त्रीणां सौख्यसमागमं प्रकुरुते स्वाद्वर्गतो लाभदस्तारं रत्नहिरण्य कर्माणि सद्भूमिलब्धं सुखम् ॥१६१॥

जो सप्तमेश सुखेश लग्न में अथवा सप्तम हो और सौम्यग्रह के सहित हो या सौम्यग्रह की दृष्टि हो यह शृंगार योगदाता स्त्रीसमागमसुख देनेवाला अपने वर्ग से लाभ रत्न सुवर्ण कर्मप्राप्ति करनेवाला तथा भूमिसुख करता है ॥१६१॥

मंदोच्चमिश्रास्त्रिषडायवर्ती सौम्यस्य युक्तं प्रकरोति लाभम् ॥ रिष्टविनाशं नृपतोर्थ लाभं करोति सौख्यं बहुलं प्रतापम् ॥१६२॥

जो शनि उच्च के तीसरे छठे सौम्ययुक्त हो तो लाभ करता है अरिष्ट का नाश राजा से अर्थलाभ सुख और प्रताप करता हैं ॥१६२॥

केंद्रत्रिकोणे च गतोऽब्दनाथः सौम्ये च रम्यं

सकलं तदाऽब्दे ॥ शत्रोर्विनाशं धनधान्यलाभं
यशःप्रदं वै खलु शत्रुनाशम् ॥१६३॥

जो वर्षपति केन्द्र वा त्रिकोण में स्थित हो और सौम्यग्रह से युक्त हो तो उस सम्पूर्ण वर्ष में शुभ हो, तथा शत्रुनाश धनधान्य का लाभ यशदाता शत्रुनाश करता है ॥१६३॥

सप्तमे च यदा राहुर्भौमचन्द्रसमन्वितः ॥
कलत्रेशो यदा चास्ते तदा स्त्रीनिधनं ध्रुवम् ॥

जो राहु सातवें मंगल और चन्द्रमा के सहित कलत्र स्थान के पति के साथ स्थित हो तो अवश्य स्त्री का निधन होता हैं ॥१६४॥

वर्षेब्दकर्काख्यविलोमसंस्थे राहुर्भवेदिष्ट
विनाशकर्तुः ॥ शुभाश्च योगा बहवो यदि
स्युस्तथाऽप्यरिष्टं विलयं प्रयाति ॥१६५॥

जो वर्ष में कर्क का राहु यदि लग्न में हो तो इष्ट का नाश करता है और जो अनेक शुभयोग हों तो अरिष्ट दूर भी हो जाते हैं ॥१६५॥

नक्रत्रये लाभरिपुत्रिसंस्थे केतुस्तु हेतुर्निधनो
पशांतैः ॥ परस्परं भार्गवजीवसौम्यास्त्रि
कोणगास्तेऽपि हरंत्यरिष्टम् ॥१६६॥

मकरकुंभ मीन लग्न एकादश और छठे घर में हों केतु

अष्टमघर में हो शुक्र जीव सौम्यग्रह युक्त परस्पर देखें वा स्थित हों तो अरिष्ट दूर होते हैं ॥१६६॥

खल्लासरो नाम यदा च योगस्तदा हि वर्षे कुरुते नराणाम् ॥ महाव्यथां चोदरपित्तकोपैः सपुत्रबन्धोश्च भवेदरिष्टम् ॥१६७॥

और जब खल्लासरयोग वर्ष में हो तो उस वर्ष में मनुष्यों को महाव्यथा हो उदर में व्यथा पित्त का कोप तथा पुत्र और बंधुओं में अरिष्ट हो ॥१६७॥

सौम्यास्त्रयो लग्नगता यदि स्युः कुर्वन्ति नाना नृपतीन्विनीतान् ॥ पापास्त्रयो दुःखदरिद्र शोकैर्युक्तं नितांतं बहुभाग्यकं च ॥१६८॥

तीनों सौम्यग्रह यदि लग्न में स्थित हो तो अनेक सुख नृपतुल्य करते हैं और जो तीनों पापग्रह लग्न में हों तो दुःख दरिद्र शोक करते हैं ॥१६८॥

भाग्ये च लाभे सहजे च केंद्रे चेद्वर्षकाले मुथहाधिनाथः ॥ करोति पुंसां विपुलप्रतापं मैत्रीं नृपात्सन्मतिवर्द्धनं च ॥१६९॥

जो मुंथापति दशवें ग्यारहवें तीसरे पहले चौथे सातवें दशवें स्थान में हो तो मनुष्य को प्रतापयुक्त राजा से सन्मान भागी करता हैं ॥१६९॥

सप्तांशवर्गे यदि सप्तमस्थे राहौ सखेटे खलु तत्र

नाशम् ॥ तदा नराणां बहुकन्यकानां स्वप्नेऽपि पुत्रः खलु दुर्लभः स्यात् ॥१७०॥

जो सप्तांश वर्ग का स्वामी सप्तम में स्थित हो वा राहु के सहित हो तो अनिष्ट होता वा कन्या ही उत्पन्न होती है स्वप्न में भी पुत्र दुर्लभ होता हैं ॥१७०॥

भृत्यारिनाथो यदि द्वादशस्थः क्रूरैर्ग्रहैर्युग्यदि वा च सौरिः ॥ तदा हि वर्षे प्रकरोति शीघ्रं हरत्यरिष्टं निजवर्गमुख्यैः ॥१७१॥

अष्टम छठे का स्वामी यदि बारहवें स्थान में स्थित हो अथवा सूर्यपुत्र क्रूरग्रहों से युक्त हो तो उस वर्ष का अरिष्ट दूर होता हैं तथा अपने वर्ग का अरिष्ट होता हैं ॥१७१॥

(रोमताजिके)

मुंथाधिनाथो यदि मृत्युभावे षष्ठे च मुंथा भवतीह वर्षे ॥ तदा हि बालान्कुरुतेंगपीडां सहोदरैर्गुल्मकृतं ह्यरिष्टम् ॥१७२॥

रोमताजिक में लिखा है कि, मुंथापति यदि मृत्युभाव में स्थित हो और छठे घर में मुंथा हो तो स्त्री के अंग में पीडा उदर में गुल्मादि रोग तथा अरिष्ट हो ॥१७२॥

सौख्याधिपेऽरिव्ययगेऽष्टमस्थे पापान्विते जनुषि तुर्यपत्तौ च दग्धे ॥ क्रूरेक्षिते प्रकुरुते खलु तत्र वर्षे मातुः क्षयं विविधरुक्प्रकरोति

शीघ्रम् ॥१७३॥

चौथे घर का स्वामी यदि छठे बारहवें आठवें पापग्रह संयुक्त हों लग्न और चतुर्थपति दग्ध हो क्रूरग्रह देखते हों तो उस वर्ष में माताका क्षय अनेक रोग होते हैं ॥१७३॥

सौख्याधिपे जनुषि पूर्णबले च केंद्रे लाभत्रिकोणभवने खलु सौम्ययुक्ते ॥ सौख्यागमं धनचयं खलु शत्रुनाशं भूपाज्जयं च खलु मातृसुखं हि वर्षे ॥१७४॥

सुखस्थान का स्वामी जन्म में पूर्ण बलयुक्त हों वा केन्द्रस्थान लाभ स्थान त्रिकोण में सौम्यग्रह से युक्त हों तो सुख की प्राप्ति धन यश मिले, शत्रुनाश और वर्ष में माता को सुख हो ॥१७४॥

मुंथाधिनाथो यदि लग्ननाथः षष्ठाष्टमे क्रूरयुतिं करोति ॥ मृत्युः स्वपाके कुरुते नराणां फलं तदर्द्धं शुभदृष्टियुक्ते ॥१७५॥

जो मुंथापति और लग्नपति छठे अष्टम क्रूरग्रहोंसे युक्त हों तो मनुष्यों की निज दशा से मृत्यु करते हैं और शुभग्रह की दृष्टि हो इनसे आधा फल होता है ॥१७५॥

कर्माधिनाथो यदि कर्मभावे धनाधिनाथो यदि पंचमस्थः ॥ तदा नराणां धनधान्यलाभं शत्रुक्षयं चैव हरत्यरिष्टम् ॥१७६॥

कर्मस्थान का मालिक यदि कर्मस्थान में स्थित हो धन का स्वामी यदि पंचम भाव में स्थित हो तो मनुष्यो को धनधान्य का लाभ शत्रुक्षय और अरिष्ट का नाश होता हैं ॥१७६॥

सहजभावपर्तियदि मृत्यगः खलखगैस्सहितोऽथविलोकितः ॥ विविधकष्टकरं तनु पीडनं भवति भ्रातृवियोगकरं च परम् ॥१७७॥

तीसरे स्थान का स्वामी यदि मृत्युस्थान में स्थित हो और क्रूरग्रह उसको देखते हों तो अनेक कष्ट शरीरपीडन तथा भाई का वियोग भी हो ॥१७७॥

संताननाथो रविमंडलस्थः सन्तानभावे यदि पापखेटाः ॥ तदा च वर्षे धनधान्यनाशं संतानकष्टं कथितं मुनीन्द्रैः ॥१७८॥

जो पंचम घर का स्वामी सूर्यमंडलमें स्थित हो संतानके घरमें यदि पापग्रह हो तो उस वर्षमें धनधान्यका नाश और संतान कष्ट होता है ऐसा मुनीन्द्र कहता हैं ॥१७८॥

धनस्थिते नीचखगे सपापे धनाधिनाथे यदि पापयुक्ते ॥ तदा हि वर्षे कुरुते नराणां धनादिचिंता विविधप्रकारैः ॥१७९॥

धनस्थान में नीच का पापग्रह पडे धन का अधिपति

यदि पापयुक्त हो तो उस वर्ष में मनुष्य को अनेक प्रकार धनादि चिंता होती है ॥१७९॥

मीनस्थिते देवगुरौ च केंद्रे पापेन युक्तेऽप्यथवा विलोकिते ॥ तदा हरेद्वै सकलं त्वरिष्टं तमो यथा भास्करदर्शनेन ॥१८०॥

जो देवगुरु मीन के केन्द्र में स्थित हो और पापग्रह से युक्त हो वा उनको पापग्रह देखता हो तो सब अरिष्ट ऐसे नाश हो जाते है जैसे सूर्य के दर्शन से अंधकार ॥१८०॥

मुंथाधिनाथो यदि पंचमस्थस्तस्याधिपे भाग्यगते स्वनीचे । तदा च वर्षे बहुलाभकारी नरेंद्रतुल्यं कुरुते हि वर्षे ॥१८१॥

जो मुंथापति पंचम हो उसका स्वामी भाग्यस्थान का नीच में प्राप्त हो तो उस वर्ष में बहुत लाभ करनेवाला है मनुष्य को राजा तुल्य करता हैं ॥१८१॥

मृत्योर्निदिशो यदि शत्रुभावे लाभाधिपे लाभगते नराणाम् ॥ सुतस्य सौख्यं गृहमित्र लाभं हरत्यरिष्टं स करोति शीघ्रम्॥१८२॥

जो अष्टमस्थान का स्वामी शत्रुभाव में हो और ग्यारहवें घर का ग्यारहवें घर में स्थित हो तो पुत्रसुख धन मित्र का लाभ और सब अरिष्ट को दूर करता है ॥१८२॥

लग्नाधिनाथो यदि कर्मनाथ एकोयदिस्या-

त्किल पंचमस्थः ॥ तदा हि वर्षे धनधान्यलाभं
नृपोत्तमैर्मैत्र्ययशः प्रकर्षम् ॥१८३॥

जो लग्न और कर्म स्थान का मालिक एक ही पंचम स्थान में पड़ा हैं तो उस वर्ष में धनधान्य लाभ, राजों से उत्तम मित्रता और यश का उदय हो ॥१८३॥

कर्माधिनाथो यदि सौम्यखेटैर्धने सुखे वा
सहजालयस्थे ॥ चतुष्पदो वाधिपतिश्च केन्द्रे
अश्वाधिरूढं च नृपालयस्थे ॥१८४॥

कर्मस्थान का अधिपति यदि सौम्यग्रहों के साथ हो धन सुख वा सहज स्थान में स्थित हो वा चतुष्पद का अधिपति केन्द्र में हो वा दशम में हो तो घोडे की सवारी प्राप्त होती हैं ॥१८४॥

लाभाधिनाथो यदि शत्रुनाथ एको यदि
स्यात्तनुभावयातः ॥ तदा हि वर्षे प्रकरोति
शीघ्रमश्वादिरूढं नृपदत्तमानम् ॥१८५॥

ग्यारहवें और छठे घर का स्वामी एक ही होकर यदि तनुभाव में प्राप्त हो तो उस वर्ष में मनुष्य को घोडे की सवारी और राज्यमान प्राप्त होता है ॥१८५॥

धनाधिनाथो व्ययभावयातो व्ययाधिनाथो
मृतिभावसंस्थः ॥ तदा हि वर्षे शिवपूजनीय

स्वज्ञातिमध्ये व्ययमाधिकं च ॥१८६॥

जो धन का अधिपति व्ययस्थान १२वें हो और बारहवें घर का स्वामी अष्टम हो तो उस वर्ष में शिव का पूजन करे, स्वजाति में अधिक व्यय की प्राप्ति होती हैं ॥१८६॥

मुंथाधिनाथो यदि कर्मभावे सौम्यग्रहैर्युक्त निरीक्षिते च ॥ तदा च वर्षे सकलार्थलाभं निरोगतां बाहुबलप्रतापम् ॥१८७॥

जो मुंथापति कर्मभाव में स्थित हो और सौम्य ग्रह से युक्त हो वा उसको सौम्य ग्रह देखते हों तो उस वर्ष में सब अर्थ की प्राप्ति निरोगता और बहुत बाहुबल का प्रताप होता हैं ॥१८७॥

तृतीयस्थो यदा राहुः षष्ठे सौरिसमन्विते ॥ रिपुरोगान्विनश्यंति स्वकुले च नृपोत्तमैः ॥

जो तीसरे राहु और छठे सूर्य हो तो शत्रु और रोगों का नाश हो अपना कुल राजा के समान बढें ॥१८८॥

त्रिषडाव्यये पापा धने सौम्यशुभेक्षिताः॥ तदा वर्षे विजानीयात्प्रीतिश्चैव नृपोत्तमैः ॥१८९॥

तीसरे छठे ग्यारहवें बारहवें धनस्थान में पापग्रह सौम्ययुक्त हों वा सौम्यग्रह की दृष्टि से युक्त हो तो उस वर्ष में राजा से प्रीति होगी ऐसा जाने ॥१८९॥

यदार्कपुत्रो बलवान्व्ययस्थः सौम्येक्षितो वा खलु सौम्ययुक्तः ॥ तदा नराणां बहुकष्टनाशं शरीरसौख्यं कथितं मुनीन्द्रैः ॥१९०॥

जो शनि बलवान् होकर बारहवें घरमें स्थित हो सौम्यसे दृष्ट हो वा सौम्यग्रहसे युक्त हो तो मनुष्योंका कष्टनाश शरीरमें सुख हो यह मुनिजन कहते हैं ॥१९०॥

हर्षस्थाने संस्थिते चार्कपुत्रे सौम्यैर्दृष्टे साधिकारे बलिष्ठे ॥ जीवे केंद्रे वीर्ययुक्ते हि वर्षे शत्रोर्नाशं रिष्टभंगं करोति ॥१९१॥

जो शनि हर्षस्थानमें स्थित हो, सौम्यग्रहकी दृष्टि और अपने घरका हो और केन्द्रमें बृहस्पति हो तो शत्रुका नाश और अरिष्ट भंग हो ॥१९१॥

जन्माधिनाथो यदि सौम्ययुक्तो मुंथाधिनाथ स्सहितस्तृतीये ॥ तदा हि वर्षे कुरुते नराणां हरत्यरिष्टं सकलं ग्रहाणाम् ॥१९२॥

जो जन्मलग्नका मालिक सौम्यग्रहसे युक्त हो, और मुंथापति तीसरे हो तो उस वर्षमें मनुष्यके सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं ॥१९२॥

त्रिराशिनाथो यदि कर्मभावे कर्माधिनाथो नवपंचमे वा ॥ तदा हि वर्षे प्रकरोति नूनं

हरत्यरिष्टं कथितं मुनीन्द्रैः ॥१९३॥

जो त्रैराशिपति कर्मभावमें स्थित हो और कर्मस्थानका अधिपति नवमें पांचवें स्थित हो तो उस वर्षमें अवश्यही सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं ॥१९३॥

लग्ने राहुस्तथा सौरी रंध्रे देवगुरुर्यदा ॥ मूर्तौ षष्ठाष्टमश्चंद्रो गृहे ज्वलति पावकः ॥

जो लग्नमें राहु सूर्यपुत्र अष्टममें देवगुरु हो मूर्तिमें तथा छठे आठवें चन्द्रमा स्थित हो तो घरमें अग्नि प्रज्वलित होती है ॥१९४॥

यदा सवीर्यो मुथहाधिनाथो लग्नाधिपो जन्म विलग्नगो वा ॥ केंद्रत्रिकोणायगतस्तदानीं सुखार्थलाभं विनिहन्त्यरिष्टम् ॥१९५॥

जो मुंथापति बलवान् हो लग्नके अधिपति लग्नस्थानमें हो तो वा केन्द्र और त्रिकोणमें प्राप्त हो तो सुख अर्थलाभ और अरिष्टनाश हो ॥१९५॥

भौमे यदा जन्मनि चाष्टमस्थे वर्षे सपापे दशमस्थिते च ॥ नीचर्क्षगे वा रविमंडलस्थे तदाऽर्थलाभं विनिहन्त्यरिष्टम् ॥१९६॥

जो मंगल जन्म वा अष्टममें प्राप्त हो और वर्षमें पापयुक्त दशमें स्थानमें स्थित हो नीचमें स्थित हो वा रविमंडलमें स्थित हो तो अर्थलाभ और अरिष्टका नाश

हो ॥१९६॥

चंद्राद्यदा सप्तमगे च जीवे युक्तेऽथवा स्यात्किल यत्र वर्षे ॥ करोति सौख्यं विविधार्थलाभमरिष्टनाशं सकलं नराणाम्॥

जो बृहस्पति चन्द्रमा से सप्तम स्थान में प्राप्त हो अथवा उससे युक्त हो तो अनेक सुख अर्थलाभ और अरिष्टका नाश करता है ॥१९७॥

केन्द्रे त्रिकोणे च तथा तृतीये स्वोच्चस्थिते भूमिसुतेऽब्दनाथे ॥ धनं च लाभं किल रिष्टनाशं भूपालतुल्यं प्रकरोति वर्षे ॥१९८॥

जो मंगल वर्षपति केन्द्रत्रिकोण तीसरे वा अपने से उच्चस्थान में प्राप्त हो तो धनलाभ अरिष्टनाश तथा राजा के तुल्य उस वर्ष में करता है ॥१९८॥

सौम्यग्रहैः कंटकगैरसौम्यैस्त्रिषष्ठलाभोपग तैर्विलग्नात् ॥ कीर्तिं प्रियां पुत्रधने च रत्नं शुभं च वस्त्रादिसुखार्थलाभम् ॥१९९॥

जो सौम्यग्रह केन्द्र में प्राप्त सौम्यग्रह से रहित हो तथा लग्न से तीसरे छठे वा लाभस्थान में स्थित हो तो उस वर्ष में कीर्ति प्रिया पुत्र धन रत्न वस्त्र सुखादि की प्राप्ति होती है ॥१९९॥

जन्मांगपे वीर्ययुते त्रिकोणे त्रिराशिनाथो यदि

कंटकस्थः ॥ क्रूरैरदृष्टे सततं च सौख्यं हरत्यरिष्टं सकलं स वर्षे ॥२००॥

जो जन्मलग्नपति बलवान् त्रिकोण में प्राप्त हो और त्रिराशिपति केन्द्रस्थान में स्थित हो क्रूरग्रह न देखते हो तो निरन्तर सुख मिले और उस वर्ष में सब प्रकार अरिष्ट नष्ट होता हैं ॥२००॥

द्युनेशो यदा केंद्रगो वीर्ययुक्तः शुभैस्संयुतो वीक्षितो वा नराणाम् ॥ स कर्तांगसौख्यं धनं धान्यलाभं पुण्योदयं शत्रुनाशं करोति।२०१।

सप्तमभावपति जो केंद्र में प्राप्त होकर वीर्ययुक्त हो तथा शुभग्रहों से संयुक्त वा वीक्षित हो तो सब अंग में सुख धनधान्यलाभ पुण्योदय और शत्रु का नाश हो ॥२०१॥

कलत्रभावे यदि देवपूज्ये स्वोच्चं गते वा कुजसंयुते वा ॥ तदा च वर्षे धनधान्यलाभं हेमांबरादेनृपदत्तमानम् ॥२०२॥

जो बृहस्पति सप्तम हो उच्च का हो वा मंगल के साथ हो तो वर्ष में धनधान्यलाभ सुवर्ण अम्बरादि से राजाओं से मान प्राप्त होता है ॥२०२॥

धनपर्तिर्यदि लाभगतो गुरुर्नवमभावगतो भृगुसंयुतः ॥ कनकवृष्टिरिलापतिसंगमाद्रि

पुलयं कुरुते स्वदशागते ॥२०३॥

धन का स्वामी यदि ग्यारहवें स्थान में हो और शुक्र के सहित गुरु भाव में स्थित हो तो राजा के संगम से सुवर्णवृष्टि हो अपनी दशा में शत्रु का नाश हो ॥२०३॥

मुंथापतिर्लग्नपतिर्युतश्चेन्मृत्युस्थितो मृत्यु समं करोति ॥ गुह्येन्द्रिये वा रुधिरप्रकोपं कंठावरोधं कथितं मुनीन्द्रैः ॥२०४॥

जो मुंथापति वर्षलग्न के साथ होकर अष्टम स्थान में स्थित हो तो मृत्यु के समान ही कर देता है, गुह्येंद्रिय में पीडा रुधिरप्रकोप कंठावरोध हो ऐसा मुनिजनों ने कहा है ॥२०४॥

कलत्रनाथे व्ययगे समंदे कलत्रपीडा कथिता हि वर्षे ॥ लोकापवादं स्वजनेषु वैरं संतानपीडा मनसो विचालः ॥२०५॥

जो सातवें घर का मालिक शनि के साथ बारहवें घर में स्थित हो तो उस वर्ष में कलत्रपीडा करे लोकापवाद स्वजनों में वैर सन्तानपीडा मन में व्यग्रता हो ॥२०५॥

लग्ने यदा राहुकवी भवेतां लग्नप्रभू शुक्रखगेनसार्थम् ॥ यानादिकं कर्म तथैव निश्चितं विपश्चितो नीचगृहं वदन्ति ॥२०६॥

जो लग्न में राहु और शुक्र हो और लग्नपति शुक्र के

साथ हो तो यानादिकर्म निश्चित हो तथा नीच में प्राप्त होने से वैसे ही कर्म होते हैं ॥२०६॥

नीचस्थे लग्नगे भौमे पापयुक्तेऽथ वीक्षिते ॥ तदा कष्टं विजानीयात्स्त्रीणां कष्टं विशेषतः।२०७।

जो नीच का मंगल लग्न में पापग्रह युक्त हो वा पापग्रह की उस पर दृष्टि हो तो उस वर्ष में विशेष कर स्त्रियों को कष्ट हो ॥२०७॥

जन्मेशस्तनुनायको यदि भवेत्केंद्रेऽथवा पंचम दृष्टे सौम्ययुते करोति सततं सर्वाख्य-सौख्यप्रदम् ॥ नानाभूषणहेमसंततिसुखं पुत्रार्थलाभप्रदं स्त्रीणां सौख्ययुतं करोति सततं सर्वं त्वरिष्टं हरेत् ॥२०८॥

जो जन्मलग्न का अधिपति केन्द्र वा पंचम स्थान में प्राप्त हो सौम्यग्रह से युक्त वा सौम्यग्रह की दृष्टि से युक्त हो तो सब प्रकार सुख देता है, अनेक प्रकार के भूषण वस्त्र सन्तान का सुख तथ् स्त्रीजनों का सुख करता है तथा अरिष्ट भंग करता हैं ॥२०८॥

भ्रातृनाथो यदा षष्ठे पापयुक्तो विलोकितः॥ तदा भ्रातुर्भवेत्पीडा विविधं कष्टदायकम् ॥

जो तीसरे स्थान का स्वामी छठे पापग्रह से युक्त हो वा पापग्रह की दृष्टि हो तो भाई को अनेक प्रकार के कष्ट

और पीडा हो ॥२०९॥

रविसुतो यदि धर्मधनस्थितः कुजयुतो धनसौख्ययुतस्तदा ॥ धनसुखं खलु मित्रभवं सुखं रिपुलयं सुतभे करपीडनम् ॥२१०॥

जो सूर्यपुत्र धर्म धनस्थान में स्थित मंगल से युक्त हो अथवा धन और सुखस्थान में हो तो धनसुख मित्र का सुख हो शत्रुक्षय हो पांचवें हो तो करपीडन हो ॥२१०॥

व्ययस्था गुरुसौर्यर्कास्तस्मिन्वर्षे व्ययाधिकम् ॥ स्वजनैः कुरुते वैरं परेषु च सुखप्रदम् ॥

जो बारहवें गुरु सूर्य और शनि हो तो उस वर्ष में अधिक खर्च हो अपने जनों से वैर और पर जनों को सुख देनेवाला है ॥२११॥

अथारिष्टहर्ता योगः

नीचस्थिते जन्मनि यद्ग्रहश्च तद्वर्षगे भवति चाष्टममित्रभावे ॥ सौख्यप्रदं धनसुखं बहुलं विशालं मित्रागमं सकलरिष्टहरं च वर्षे ॥

जो जन्म में ग्रह नीच का हो और वर्ष में वही ग्रह अष्टम वा मित्रभाव में हो तो अनेक सुख धन का देनेवाला है मित्र का आगम करने वाला तथा वर्ष में सम्पूर्ण अरिष्ट दूर करता है ॥२१२॥

लग्नाधिपे केंद्रगते बलिष्ठे सौम्येक्षिते वा सहिते

हि वर्षे ॥ धनं च लाभं खलु रिष्टनाशं गुप्तस्य सौख्यं कथितं मुनीन्द्रैः ॥२१३॥

जो लग्न का मालिक केन्द्र में प्राप्त हो और बलिष्ठ हो सौम्य ग्रह के सहित हो वा सौम्यग्रह उसे देखता हो तो धन का लाभ अरिष्टनाश और गुप्त सुख हो यह मुनीन्द्रों ने कहा हैं ॥२१३॥

यदींथिहेशो निजभाग्यवर्ती स्वोच्चं गतो मित्रशुभैश्च दृष्टः ॥ ददाति लक्ष्मीं गजरत्नहेमप्रवालकायं खलु रिष्टनाशम् ॥

जो मुंथा का पति निज भाग्य स्थान में स्थित हो तथा उच्चस्थान में प्राप्त होकर शुभमित्रों से देखा गया हो तो लक्ष्मी, गजरत्न, सुवर्ण, मूँगे आदि की प्राप्ति होती हैं तथा अरिष्टनाश होता हैं ॥२१४॥

लाभाधिपे लग्नगतेऽब्दपेशे लाभस्थिते वा यदि सौम्ययुक्ते उभौनभस्थे कुरुते हि वर्षे हरत्यरिष्टं कथितं मुनीन्द्रैः ॥२१५॥

जो ग्यारहवें स्थान का अधिपति लग्न में स्थित हो अथवा ग्यारहवें घर का मालिक सौम्यग्रह के सहित लग्न में स्थित हो तो अथवा दोंनो दशमभाव में स्थित होकर सम्पूर्ण अरिष्ट को दूर करतें है ऐसा मुनीन्द्रों ने कहा है ॥२१५॥

मृत्युस्थिते भवति चंद्रखगे समुच्चे भावे यदा

भवति देवगुरुस्तृतीये ॥ तद्वन्नवांशगत पंचमगे
समुच्चे चंद्रे यदा हरति रिष्टगणं हि वर्षे ॥

यदि चन्द्र अष्टमस्थान में हो और उच्च का हो अथवा देवगुरु तीसरे स्थान में उच्च का हो अथवा चन्द्रमा नवांश अथवा पंचमस्थान में हो तो उस वर्ष के सम्पूर्ण अरिष्ट दूर करता हैं ॥२१६॥

सहजभावपतिः सहजे स्थितो बुधगुरु यदि
शुक्रसमन्वितौ ॥ सकलरिष्टहरं गृहकोद्भवं
यदपि चास्तगृहं च जयं कुरु ॥२१७॥

जो तीसरे घर का मालिक तीसरे स्थान में स्थित हो और बुध गुरु यदि शुक्र के साथ में हों तो सम्पूर्ण घर के अरिष्ट दूर करते हैं यद्यपि सप्तमभाव के हों तो भी जय देते हैं ॥२१७॥

मृत्युस्थिते जन्मनि भूमिपुत्रे वर्षे बलाढचे
दशमं प्रपन्ने ॥ चतुष्पदात्स्यात्पतनं तथाब्दे
चन्द्रेक्षिते वा विनिहन्त्यरिष्टम् ॥२१८॥

जो मंगल अष्टम लग्न में अथवा दशवें घर में हो तो उस वर्ष में चौपायों से चोट लगे और चन्द्रमा की दृष्टि हो तो अरिष्ट दूर हो ॥ २१८॥

एकोऽपि जीवबुधशुक्रखगेषु केंद्रे नीचद्विड
स्तरहितः सहितश्च सौम्यैः ॥ उद्दालकादि

ऋषिर्वचनं प्रयुक्तं दुष्टग्रहात्सकल रिष्टहरं च वर्षे ॥२१९॥

यदि गुरु, बुध, शुक्र, इनमें से कोई एक ग्रह भी केन्द्र में पड जाय नीच का न हो और शत्रु के साथ न हो सौम्यग्रह से संयुक्त हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं यह उद्दालकादि मुनियों का वचन है ॥२१९॥

रुक्सद्माधिपतिः खलैर्यदि युतो दृष्टोऽथ रोगार्तिदः ॥ सौम्यश्चेद्युतवीक्षितो बलयुतो रोगार्त्तिनाशं चरेत् ॥२२०॥(अर्धम्)

रोग के स्थान का स्वामी यदि क्रूरग्रहों के साथ हो देखता हो तो रोग करता है और जो सौम्यग्रह युक्त हो वा सौम्यग्रह की दृष्टि और बलवान् हो तो रोग का नाश करता है ॥२२०॥

पापो वर्षविलग्नगो हिमरुचिर्वारित्रि लाभस्थितो हन्यात्सौम्ययुतेक्षितो हि सकलं रिष्टं पुराभाषितम् ॥ वीर्याढ्योऽपि विलग्नगः शुभयुतः केंद्रानुगोऽसौ हरिर्दृष्टे सौम्ययुतेक्षितेऽब्दसमये जीवस्तथा वा भृगुः॥२२१॥

वर्ष में पापग्रह विलग्न में प्राप्त हुआ हो वा चन्द्रमा सुख स्थान ग्यारहवें घर में स्थित हो और सौम्यग्रह के साथ हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं अथवा बली शुभग्रहों के

सहित लग्न के स्थान में वा केन्द्र में प्राप्त हो अथवा सौम्यग्रह बृहस्पति वा शुक्र सौम्य युक्त हो तो सब अरिष्ट दूर करते हैं ॥२२१॥

लाभे तृतीये यदि सैंहिकेयः सौम्यैश्च युक्तेऽप्यथवा विलोकिते ॥ तदा त्वरिष्टस्य करोति नाशं लग्नोद्भुवो वा मुंथहाभुवो वा॥

यदि राहु ग्यारहवें तीसरे स्थान में सौम्यग्रहों से युक्त हो वा सौम्यग्रह उसको देखते हों, तो लग्न अथवा मुंथा के अरिष्ट को नाश करते हैं ॥२२२॥

मुंथोपचयगः सूर्योऽथवा भवति मंगलः ॥ तद्वर्षे क्षेममारोग्यं सकलारिष्टनाशनम् ॥

यदि मुंथा के साथ सूर्य हो वा मंगल हो तो उस वर्ष में क्षेम आरोग्य तथा सम्पूर्ण अरिष्ट का नाश होता हैं ॥२२३॥

मुंथाधिनाथो सहजेशयुक्तः सौम्यैश्च युक्ते च निरीक्षिते च ॥ तदा ह्यरिष्टं द्विषतां विवादो भीतादिपातेन करोत्यरिष्टम् ॥२२४॥

यदि मुंथापति सौम्यग्रहों से सहित तीसरे स्थान में हो, या सौम्यग्रहों से देखा हुआ हो तो महाअरिष्ट शत्रुओं का विवाद तथा भीतादि पात से अरिष्ट होता है ॥२२४॥

तृतीये च शुक्रे गुरौ धर्मचारे विधुर्मंदयुक्तो यदा

लग्नवर्ती ॥ विभूत्याश्च वृद्धिर्महत्कीर्तिलाभं
तदारिष्टनाशं धनं शक्रतुल्यम् ॥२२५॥

जो तीसरे स्थान में शुक्र वा धर्मस्थान में गुरु हो और लग्न में चन्द्रमा और शनि हों तो महाधन की प्राप्ति महान् कीर्तिलाभ अरिष्ट नाश होकर इन्द्र के तुल्य ऐश्वर्य होता हैं॥२२५॥

जन्मपे गुरुयुते च कंटके लाभनाथसहिते च
विलोकिते ॥ तत्समे सकलरिष्टनाशन-
मंधकारमिव भास्करोदयः ॥२२६॥

जन्मलग्न का मालिक बृहस्पति के सहित हो और केंद्र में हो तथा ग्यारहवें घर के स्वामी के साथ हो यदि वा उसने देखा हो तो उस समय अब अरिष्ट इस प्रकार नाश हो जाते हैं जैसे सूर्योदय से अंधकार ॥२२६॥

समाधिपे केंद्रगते बलिष्ठे अब्दांगनाथश्च
तदुच्चनाथः ॥ केंद्रस्थिते सौम्ययुतेऽर्थलाभ
मरिष्टनाशं सुखमिंद्रतुल्यम् ॥२२७॥

वर्षलग्न का स्वामी बलिष्ठ केन्द्रस्थान में स्थित हो अथवा वर्ष और लग्न का स्वामी उच्चस्थान में हो तो वा सौम्यसहित केन्द्र वा ग्यारहवें स्थान में स्थित हो तो अरिष्टनाश कर इन्द्रतुल्य सुख करते हैं ॥२२७॥

समाधिपो वा तनुनायको वा वीर्याधिकश्चेच्छु

भखेटदृष्टः ॥ पश्येद्विलग्नं किल तत्र वर्षे स्याच्छोभनं रिष्टविनाशनं च ॥२२८॥

वर्षलग्न का स्वामी वा जन्मलग्न का स्वामी बलवान् होकर शुभग्रहों से देखा गया हो और लग्न को देखे तो उस वर्ष में सम्पूर्ण अरिष्टनाश होते हैं ॥२२८॥

कर्माधिनाथो यदि कर्मभावे सौम्यैश्च युक्तोऽप्यथवाऽपि दृष्टः ॥ लग्नाधिपे केंद्रगते तदाब्देऽरिष्टस्य नाशोनृपतोऽर्थलाभः ॥

कर्मस्थान का स्वामी यदि कर्मस्थान में स्थित हो और सौम्यग्रहों से युक्त हो अथवा सौम्यग्रह देखते हों और लग्न का मालिक केन्द्र में प्राप्त हो तो उस वर्ष में अरिष्टनाश और राजा से लाभ हो ॥२२९॥

मुन्थाधिपो वा यदि केन्द्रसंस्थो लग्नाधिपो धर्मगतो बलिष्ठः ॥ द्यूनस्थिते वर्षपतौ स वर्षे मुन्थाकृतं चैव हरत्यरिष्टम् ॥२३०॥

जो मुंथा का मालिक केन्द्र में हो और लग्न का मालिक धर्मस्थान में प्राप्त हो और बलिष्ठ हो और वर्षपति सप्तम स्थान में स्थित हो तो मुंथा के अरिष्ट का अवश्य नाश होता हैं ॥२३०॥

कर्माधीशे कर्मगे सौम्ययुक्ते लाभाधीशे केंद्रसंस्थे तदानीम् ॥ रिष्टं नश्येद्भूपवर्गाच्च

लाभं शत्रोर्नाशं चांगनानां सुखं च ॥२३१॥

कर्मस्थान का स्वामी कर्म में स्थित हो वा सौम्यग्रहों से युक्त हो और ग्यारहवें घर का मालिक केन्द्र में हो तो अरिष्टनाश राजा से लाभ शत्रुनाश अंगना का सुख हो ॥२३१॥

जन्मलग्नपतिरब्दलग्नपः कंटकायनवपंचमेऽपि वा ॥ रिष्टनाशमवनीशलाभदा धर्मकार्यकरणोत्सवं सुखम् ॥२३२॥

जो जन्मलग्न का मालिक और वर्षलग्न का स्वामी केन्द्र में नवम में वा पंचम में हो तो अरिष्टनाश राजा से लाभ और सुखदायक धर्मकार्य होता है ॥२३२॥

कर्माधिपे नीचगतेऽष्टमस्थे कर्मस्थिताः पापमया ग्रहेंद्राः ॥ हरंति राज्यं विपुलं सुखं च सुकार्यहानिश्च भवेन्नराणाम् ॥२३३॥

जो कर्मस्थान का स्वामी नीच का होकर अष्टम स्थान में पडे वा कर्मस्थान में पापग्रह स्थित हो तो मनुष्यों का राज्य व सुख हरण कर मंगल कार्य की हानि करते हैं ॥२३३॥

रंध्राधिनाथो यदि कर्मसंस्थो कर्माधिनाथो यदि मृत्युभावे ॥ क्रूरेक्षिते क्रूरयुते हि वर्षे नृपाद्भयं चार्थविनाशनं च ॥२३४॥

जो अष्टम घर का मालिक कर्मस्थान में स्थित हो

और कर्मस्थान का मालिक मृत्यु भाव में स्थित हो क्रूरग्रह देखता हो वा क्रूरग्रह से युक्त हो तो राजा से भय और अर्थ का नाश हो ॥२३४॥

एकेऽपि पापेऽष्टमगेऽरिगेहे पापेक्षितेऽब्दे च शिशून्निहन्यात् ॥ सुधारसो यद्यपितैस्तुपीतै किमत्र चित्रं निधने शिशूनाम् ॥२३५॥

एक भी पापग्रह अष्टम वा शत्रु के घर में हो और पापग्रह देखता हो तो बालकों को नष्ट करे चाहे अमृत क्यों न पिया हो अवश्य नष्ट करता ही है ॥२३५॥

सोमस्य सूनुर्यदि कर्कटस्थः षष्ठेऽष्टमे वा भवने विलग्नात् ॥ चंद्रेण युक्तेऽब्दचतुष्टयेन जातस्य जंतोः प्रकरोत्यरिष्टम् ॥२३६॥

जो बुध कर्क में स्थित हो अथवा लग्न से छठें आठवें वा चौथे चन्द्रमा से युक्त हो तो होते ही प्राणी को अरिष्ट करता हैं॥२३६॥

बृहस्पतिर्मूर्तितृतीयवर्ती प्रसूतिलग्नाधिपकेन युक्तः ॥ सौम्येन युक्तः खलु शत्रुनाश मत्यर्थमर्थोपचयं करोति॥२३७॥

जो बृहस्पति मूर्ति वा तीसरे स्थान में हो वा लग्न के मालिक से युक्त हो वा सौम्यग्रह से युक्त हो तो अवश्य शत्रु का नाश और धनसन्तान की वृद्धि होती हैं ॥२३७॥

अथ समाधिपतौ।

अथ समाधिपतौ त्रिखषष्ठगे खलु खगे सबले च तदा सुखम् ॥ मनसि हर्षकरं च धनागमं रिपुलयं खलु रिष्टविनाशनम् ॥२३८॥

जो वर्षलग्न का स्वामी तीसरे छठे दशवें घर में बलयुक्त हो तो सुख और मन में प्रसन्नता होती है धनप्राप्ति शत्रुनाश तथा अरिष्टनाश होता है ॥२३८॥

शुक्रो यदा जीवयुतस्त्रिकोणे लाभे तृतीये यदि सिंहपुत्रे ॥ तदा त एते सकलं च रिष्टं हरन्ति पूर्वैः कथितं मुनीन्द्रैः ॥२३९॥

जो शुक्र जीव के सहित त्रिकोण में हो राहु यदि ग्यारहवें वा तीसरे हो तो उस वर्ष का अरिष्ट दूर होता है यह मुनीन्द्रों ने कहा है ॥२३९॥

भौमे यदा सप्तमराशिसंस्थे भावेऽष्टमे देवगुरुश्च याते ॥ शुक्रोष्टमे चंद्रगते हि वर्षे खल्लासरं योगमुशंति संतः ॥२४०॥

जो सातवें घर में मंगल हो और अष्टम भाव में देवगुरु हो शुक्र अष्टम चन्द्रमा के सहित हो तो महात्माओं ने इस योग का नाम खल्लासर कहा है ॥२४०॥

मृतेर्हिनाथो यदि वै व्ययस्थः क्रूरैर्ग्रहैर्दृष्टयुतश्च सौरिः ॥ तदा हि वर्षे प्रकरोति शीघ्रं शरीरकष्टं

निजवर्गसंघात् ॥२४१॥

अष्टम घर का स्वामी जो बारहवें हो और जब क्रूरग्रह से दृष्ट वा युक्त हो तो उस वर्ष में अपने वर्ग से शरीर को कष्ट हो इस में संदेह नहीं ॥२४१॥

लग्नाधिनाथोऽथ च कर्मनाथ एको यदि स्यात्किल यत्र वर्षे ॥ हरत्यरिष्टं सकलार्थलाभं कीर्त्युद्गमो भूपसुहृत्तमैश्च ॥

जिस वर्ष में लग्न और कर्म का स्वामी एक ही हो तो उस वर्ष में सब अरिष्ट दूर हो कर सब अर्थ का लाभ हो राजा और मित्रों से यश तथा सुख मिले ॥२४२॥

मीनस्थिते देवगुरुश्च लग्ने पापेन युक्तेन विलोकितेन ॥ भवेद्विनष्टं सकलं च रिष्टं तमो यथा भास्करदर्शनेन ॥२४३॥

लग्न में बृहस्पति मीन का हो और पापग्रह से युक्त हो वा देखा हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट ऐसे दूर होते हैं जैसे सूर्य के दर्शन से अंधकार ॥२४३॥

स्वल्पांशयुक्ते कुमुदेकबंधौ मंदे धनांशे ध्रुवमित्थशालम् ॥ तदा हि वर्षे खलु रिष्टनाशं नरेन्द्रपूज्यो बहुमानकीर्तिः ॥२४४॥

यदि चन्द्रमा अपने थोडे अंशो में स्थित हो और शनि मुंथा धन में स्थित हो तो उस वर्ष में सम्पूर्ण अनिष्ट नष्ट

होते है राजा से मान बडाई और कीर्ति मिलती है ।।२४४।।

हर्षस्थाने संस्थिते चार्कपुत्रे सौम्यैर्दृष्टे साधिकारे बलिष्ठे ।। जीवे केंद्रे वीर्ययुक्ते स वर्षे शत्रोर्नाशं रिष्टभंगं करोति ।।२४५।।

जो शनि हर्ष के स्थान में स्थित होकर सौम्यग्रहों की दृष्टि युक्त अपने अधिकार में बलिष्ठ हो और बृहस्पति केन्द्र में स्थित हो तो शत्रुनाश व अरिष्ट भंग होय ।।२४५।।

जन्माधिनाथो यदि सौम्ययुक्तो मुन्थाधिनाथः सहितस्तृतीये ।। तदा हि वर्षे कुरुते नराणां हरत्यरिष्टं सकलं ग्रहाणाम् ।।२४६।।

जन्मलग्न का मालिक यदि सौम्यग्रहों से युक्त हो और मुंथा स्थान के स्वामी के साथ तीसरे घर में पडा हो तो मनुष्यों के उस वर्ष में सब अरिष्ट दूर होते है ।।२४६।।

त्रैराशिनाथो यदि कर्मभावे कर्माधिनाथो यदि पंचमस्थः ।। तदा हि वर्षे प्रकरोति नूनं हरत्यरिष्टं कथितं मुनीन्द्रैः ।।२४७।।

त्रिराशिपति यदि कर्मभाव में स्थित हो और कर्मस्थान का स्वामी पंचमस्थान में स्थित हो तो उस वर्ष में सम्पूर्ण अरिष्ट दूर हों ऐसा मुनियों ने कहा है ।।२४७।।

यदा सवीर्यो मुथहाधिनाथो लग्नाधिपो जन्मविनग्नपो वा ।। केंद्रत्रिकोणाय गतास्त

दानीं सुखार्थलाभं खलु रिष्टनाशम् ॥२४८॥

जो मुंथापति बलवान् होकर पडे अथवा लग्नपति वा वर्ष का पति केंद्र वा त्रिकोण में स्थित हो तो उस वर्ष में सुख अर्थलाभ तथा अरिष्टनाश होता है ॥२४८॥

मुंथ पंचमगे सूर्येऽथवा भवति मंगलः ॥ तद्वर्षे क्षेममारोग्यं सकलारिष्टनाशनम् ॥२४९॥

मुंथा से सूर्य वा मंगल पंचमस्थान में पडे हो तो उस वर्ष में क्षेम आरोग्यऔर सब अरिष्टनाश होते हैं ॥२४९॥

लग्नेशलाभाधिपती स्वराशौ युक्ते चकेंद्रे त्रिकलाभसंस्थौ ॥ वीर्यान्वितौ चेत्कुरुतो नराणामरिष्टनाशं सकलं हि वर्षे ॥२५०॥

जो लग्नपति और ग्यारहवें स्थान का अधिपति अपने घर में हों वा केन्द्र लाभ और त्रिकोण में स्थित हो और बलिष्ठ हों तो उस वर्ष के सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं ॥२५०॥

चंद्राद्यदा सप्तमगश्च जीवो युक्तोऽथवा स्यात्किल यत्र वर्षे ॥ करोति सौख्यं विविधार्थलाभमरिष्टनाशं सकलं नराणाम्॥

जो गुरु चन्द्रमा से सातवें स्थान में स्थित हो अथवा गुरुयुक्त हो तो अनेक अर्थलाभ व अरिष्टनाश होकर सब सुख होता है ॥२५१॥

भौमे यदा जन्मनि चाष्टमस्थे वर्षे सपापे

दशमस्थिते च ॥ नीचर्क्षगे वा रविमंडलस्थे तदार्थलाभं ननु रिष्टनाशः ॥२५२॥

जो मंगल जन्म में अथवा अष्टमस्थान में पापग्रह के सहित हो वा दशमस्थान में स्थित हो नीच हो वा सूर्य के साथ हो तो अर्थलाभ और अरिष्टनाश हो ॥२५२॥

केंद्रत्रिकोणेषु तथा तृतीये स्वोच्चस्थितो भौमयुतोऽब्दनाथः ॥ धनं च लाभं किल रिष्टनाशं भूपालतुल्यं प्रकरोति वर्षे ॥

जो मंगल सहित चन्द्र केन्द्र त्रिकोण में वा तीसरे स्थान में उच्च में स्थित हो तो धन का लाभ अरिष्टनाश तथा मनुष्य को राजा के तुल्य करता है ॥२५३॥

जन्मेश्वरे हायनलग्ननाथे केन्द्रत्रिकोणाय गते बलिष्ठे ॥ तदा नराणां धनधान्यलाभो ह्यरिष्टनाशः कथितो मुनीन्द्रैः ॥२५४॥

जो जन्मलग्न का अधिपति और वर्षपति केन्द्र और त्रिकोण में बलयुक्त प्राप्त हो तो मनुष्यों को धनधान्य का लाभ और अरिष्ट का नाश होता है ऐसा मुनिजनोंने कहा है ॥२५४॥

चंद्रे यदा मृत्युगते च लाभे पापग्रहे सौम्ययुते क्षिते च ॥ तदा हि वर्षे प्रकरोत्यरिष्टं रिष्टस्य भंगं च करोति नूनम् ॥२५५॥

जो चन्द्रमा अष्टम स्थान में वा ग्यारवें स्थान में पापग्रह और सौम्यग्रह से युक्त हो वा देखा गया हो तो उस वर्ष में अरिष्ट होने के फल को यह योग भंग करता हैं ॥२५५॥

सिंहीसुते भवति सिंहगते मुहूर्ते षष्ठे गते हिम करे मकरे नराणाम् ॥तस्मिन्हिवर्षे हतिमेति देहः सशंभुविष्णुर्यदि रक्षिता स्यात् ।२५६।

जो राहु सिंह में स्थित हो और चन्द्रमा छठे स्थान में मकर के हो तो विष्णु शिव रक्षा करे तो भी उस वर्ष में अरिष्ट होता ही है अर्थात् देह हत होता है ॥२५६॥

लग्नाधिनाथो यदि सप्तमस्थः कलत्रनाथो भवतीह लग्ने ॥तदा हि वर्षे सकलार्थसिद्धिं हरत्यरिष्टं कथितं मुनीन्द्रैः ॥२५७॥

जो लग्नपति सप्तम स्थान में स्थित हो और सातवें घर का मालिक लग्न में हो तो उस वर्ष में सब अर्थ की सिद्धि होकर अरिष्ट दूर होता है ऐसा मुनिजनों ने कहा हैं ॥२५७॥

धनस्थाने देवगुरुर्नवमे शशिभार्गवौ ॥ तदा भाग्योदयो वर्षेऽरिष्टकष्टविनाशनम् ॥

जो धनस्थान में बृहस्पति नवम स्थान में चन्द्र शुक्र हो तो उस वर्ष में भाग्योदय अरिष्ट कष्ट दूर होते हैं॥२५८॥

निधनलग्नपती रिपुसंस्थितौ यदि विधौ

खलखेटयुतेक्षिते ॥ यमकरे विदधाति नरस्तदा यदि न पश्यति देवगुरुस्तदा ॥

जो अष्टम स्थान का मालिक छठे घर में स्थित हो और चन्द्रमा क्रूरग्रह युक्त हो अथवा क्रूरग्रह उसे देखते हों और उस पर बृहस्पति की दृष्टि न हो तो मनुष्य यमलोक को गमन करता है ॥२५९॥

वाचस्पतौ धर्मगते नराणां सौम्यग्रहे युक्त निरीक्षिते वा ॥ तदा हि वर्षे खलु रिष्टनाशं तमो यथा भास्करदर्शनेन ॥२६०॥

जो बृहस्पति धर्मस्थान में स्थित होकर सौम्यग्रहों से देखा गया हो तो उस वर्ष में अरिष्ट का नाश इस प्रकार होता है जैसे सूर्य के दर्शन से अंधकार दूर होता है ॥२६०॥

त्रिधर्मकर्मे रविसौम्ययुक्ते राजप्रियत्वं बहुलार्थलाभम् ॥ करोति राज्यं सकलार्थ सिद्धिं हरत्यरिष्टं कथितं मुनीन्द्रैः ॥२६१॥

धर्म कर्म स्थान में रवि सौम्य ग्रह से युक्त हो तो प्रीति बहुत धन का लाभ सकल अर्थ की सिद्धि होती है और अरिष्ट दूर होता है ऐसा मुनिजनों ने कहा है ॥२६१॥

अन्तर्दशायां यदि चंद्रमाः स्यान्मंदे धनांशे खलु चाष्टमस्थे ॥ तदा हि वर्षे मिथशाल योगो

नरेंद्रपूज्यः खलु रिष्टनाशः ॥२६२॥

जो चन्द्रमा अन्तर्दशा में मंदधन अंश सहित अष्टम स्थान में स्थित हो तो यह मिथशाल योग है इससे मनुष्य राजसन्मान प्राप्त करता हैं अरिष्ट नाश होता हैं ॥२६२॥

प्रसूतिकाले किल लग्ननाथे वर्षे यदा केंद्रगते नराणाम् ॥ तदा च वर्षे धनरत्नलाभं हरत्यरिष्टं कथितं मुनीन्द्रैः ॥२६३॥

जो जन्म लग्नपति वर्ष में केन्द्र में पड गया हो तो वर्ष में धन रत्न का लाभ हो और अरिष्ट का नाश हो ऐसा मुनिजनों ने कहा है ॥२६३॥

इत्यरिष्टभङ्गाध्यायः ॥

॥अथ मासफलम्॥

मासेश्वरः शत्रुगतः करोति रोगागमं वाहन वित्तहानिम् ॥ शत्रूदयः कार्यकृता न सिद्धिः प्रमेहपीडा कथिता मुनीन्द्रैः ॥२६४॥

मासफल - जो महीने का अधिपति शत्रुभाव में हो तो रोग हो और वाहन धन की हानि हो शत्रु का उदय कार्य की असिद्धि प्रमेह और पीडा हो ऐसा मुनिजन कहता हैं ॥२६४॥

तृतीयस्थौ जीवचंद्रौ सुखार्थे यदि भार्गवः ॥

तदा मासे सुखं दद्यादिष्टकष्टादिनाशनम् ॥

जो गुरु और चन्द्रमा तीसरे स्थान में स्थित हों तथा चौथे में शुक्र हो तो उस महीने में सुख हो अरिष्ट और कष्टादि का नाश हो ॥२६५॥

मासेश्वरो मृत्युगतः करोति शरीरकष्टं विविधप्रकारैः ॥ शत्रूदयं शत्रुभयं नराणां शरीरतापं कथितं मुनीन्द्रैः ॥२६६॥

यदि महीने का अधिपति अष्टम स्थान में प्राप्त हो तो शरीर में अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं शत्रु का उदय भय और शरीर का संताप अनेक प्रकार से होता है ॥२६६॥

मासेश्वरे केंद्रगते शुभेन दृष्ट युते वा बहुकष्टनाशम् ॥ धनागमं कांतिविवर्द्धनं च करोति सौख्यं विविधप्रकारैः ॥२६७॥

यदि मास का अधिपति केन्द्र में प्राप्त हो शुभग्रह की दृष्टि हो तो अनेक कष्टनाश होते है तथा धनका आगम कान्ति की वृद्धि और अनेक प्रकारका सुख होता है ॥२६७॥

लग्नस्थितो देवगुरुस्सुखे च बुधभार्गवौ ॥ तस्मिन्मासे सुखं लाभो धनधान्यं नृपोत्तमः ॥

जो देवगुरु लग्न में स्थित हो बुध शुक्र सुखस्थान में प्राप्त हों तो सुखलाभ धनधान्य की प्राप्ति होती हैं ॥२६८॥

मासेश्वरो मृत्युगतो व्ययस्थः शत्रूदयः स्याद्

विविधप्रकारैः ॥ ज्वरार्तिकष्टं खलु शत्रुघातोविषाग्निपीडा कथिता मुनीन्द्रैः ॥२६९॥

यदि मास का अधिपति अष्टम हो तो शत्रु का उदय और ज्वरकष्ट शत्रुघात विषाग्नि की पीडा अनेक प्रकार से हो ऐसा मुनिजनों ने कहा है ॥२६९॥

तृतीयस्थे यदा सूर्ये कर्मस्थे च बृहस्पतौ ॥ तदा मासे सुखं दद्यादृिष्टकष्टादिनाशनम् ॥२७०॥

जो सूर्य तीसरे स्थान में हो और बृहस्पति कर्मस्थान में हो तो उस महीने में सुख हो अरिष्ट कष्ट का नाश हो ॥२७०॥

मासेश्वरो लग्नगतः करोति धनागमं संततिमेव सौख्यम् ॥ कर्मोदयं बाहुबलप्रतापं शत्रक्षयं स्यात् खलु राजमानम् ॥२७१॥

मासपति यदि लग्न में प्राप्त हो तो धन का आगम और सन्तान का सुख होता है तथा कर्मोदय बाहुबल का प्रताप शत्रुका क्षय और राजमान प्राप्त होता है ॥२७१॥

लग्नाधिनाथः खलु रन्ध्रनाथ एको यदि स्यात्किल मृत्युभावे ॥ तदाहि मासे रुधिर प्रकोपः शरीरकष्टं विविधप्रकारे ॥२७२॥

जो लग्न का अधिपति और अष्टमस्थान का स्वामी मृत्युभाव में स्थित हो तो उस महीने में रुधिर का कोप और

अनेक प्रकार से शरीर में कष्ट हो ॥२७२॥

सप्तमस्थो यदा चंद्रो राहुणा यदि संयुतः ॥
तस्मिन्मासे महत्कष्टं स्त्रीणां कष्टं विशेषतः॥

जो सातवें स्थान में राहु के साथ चन्द्रमा हो तो उस मास में महाकष्ट हो विशेषकर स्त्रियों को कष्ट हो ॥२७३॥

चंद्रात्पंचमगो जीवो जीवान्नवमगः शशी ॥
तदारिष्टं न कुरुते रिपुरोगप्रणाशनम् ॥

जो चन्द्रमा से पंचमस्थान में गुरु और गुरु से नव में स्थान में चन्द्रमा हो तो अरिष्ट न हो शत्रु और रोग का नाश हो ॥२७४॥

मूर्तिस्थाने यदा शुक्रो द्विजराजेन संयुतः ॥
तस्मिन्मासे मुदं दद्याद्धनधान्यसुतैस्सुखम् ॥

जो मूर्तिस्थान में शुक्र चन्द्रमा के साथ हो तो आनन्द के साथ उस महीने में धनधान्य सुत का सुख हो ॥२७५॥

व्ययस्थे च यदा सूर्ये धनस्थे रविपुत्रके ॥
तदा नेत्रांगपीडा स्यादित्युक्तं तु मुनीश्वरैः ॥

जो ग्यारहवें स्थान में सूर्य और धनस्थान में रविपुत्र हो तो नेत्र और अङ्गो में पीडा हो ऐसा मुनीश्वरों ने कहा हैं॥२७६॥

नवमस्थे मृगे भौमे मुंथानाथश्च पंचमे ॥
तदाऽरिष्टं न कुर्वीत सद्भिः

सत्यमितीरितम्॥२७७॥

नवमें स्थान में मकर का मंगल हो मुंथापति पंचम हो तो अरिष्ट नही होता है ऐसा संतलोगों ने कहा हैं ॥२७७॥

मासेश्वरः पंचमगः करोति धनागमं संततिमेव सौख्यम् ॥ संताननाथो यदि चाष्टमस्थः संतानपीडा खलु तत्र मासे ॥२७८॥

मासाधिपति यदि पंचम भाव में स्थित हो तो धनागम और संतति का सुख करता है और पंचम घर का स्वासी यदि अष्टम स्थित हो तो अवश्य उस मास में सन्तान पीडा होती हैं ॥२७८॥

अष्टमस्थो यदा भौमश्चंद्रसूर्यारयुग्भवेत् ॥ तदा गुह्येंद्रिये पीडा रुधिरस्त्रावतो ध्रुवम् ॥२७९॥

जो मंगल अष्टम स्थान में स्थित होकर चन्द्रमा से युक्त हो तथा सूर्य मंगल के साथ हो तो गुह्येन्द्रिय में पीडा और शरीर में अवश्य ही रुधिरस्त्राव हो ॥२७९॥

मासेश्वरो भाग्यगतो नराणां भाग्योदयं धर्मविवर्द्धनं च ॥ स्त्रीणां विलासं खलु मित्रलाभं संतानसौख्यं प्रकरोति नूनम् ॥

जो मासाधिपति भाग्यस्थान में प्राप्त हो तो भाग्योदय तथा धर्म की वृद्धि स्त्रीविलास मित्रलाभ संतान का सुख प्राप्त होता हैं ॥२८०॥

मासेश्वरः पंचमगः करोति धनागमं संततिमेव सौख्यम् ॥ स्त्रीणां विलासं रिपुरोगनाशं सुखार्थसिद्धिं तनुतेऽत्र मासे ॥२८१॥

मासाधिपति पंचमस्थान में हो तो धनागम और सन्तान का सुख करता है स्त्रीविलास शत्रु और रोग का नाश सुख की सिद्धि उस मास में होती है ॥२८१॥

चतुर्थस्थे यदा सूर्ये दशमें पाप एव च ॥ तदा राजभयं कुर्यान्मनश्चिंता विशेषतः ॥२८२॥

चौथे स्थान में सूर्य और दशमें स्थान में पापग्रह हो तो उस समय राजभय और विशेषकर मानसी चिन्ता रहती हैं ॥२८२॥

चंद्रो मूर्तौ यदा राहुयुक्तश्चैव यदा भवेत् ॥ तदा मासे शरीरे च कृशताज्वरपीडनम् ॥२८३॥

मूर्ति में चन्द्रमा यदि राहु के साथ हो तो उस महीने में शरीर कृश और ज्वर से पीडा होती है ॥२८३॥

नवमस्थो यदा भौमो भृगुयुक्तो यदा भवेत् ॥ तदा मासे सुखं दद्याद्रिष्टकष्टादिनाशनम् ॥

नौमें स्थान में यदि मंगल शुक्र से युक्त हो तो उस महीने में सुख हो तथा अरिष्ट कष्ट का नाश हो ॥२८४॥

अष्टमस्थो यदा सूर्यो जन्मलग्नेशसंयुतः ॥ तदा गुह्योंद्रिये पीडा परिताप फलप्रदा ॥२८५॥

जो आठवें स्थान में सूर्य जन्मलग्न के अधिपति के साथ हो तो गुह्येन्द्रिय में पीडा दुःख फल की देनेवाली है ॥२८५॥

लग्नाधिपे केंद्रगते शुभेन दृष्टे युते वा बहुकष्टनाशम् ॥ करोति सौख्यं विविधं दशायां धनागमं कांतिविवर्द्धनं च ॥२८६॥

यदि लग्न का अधिपति केन्द्र में प्राप्त हो और शुभग्रह की उस पर दृष्टि हो तो अपनी दशा में अनेक प्रकार का सुख धन का आगम और कांति की वृद्धि होती हैं ॥२८६॥

निरुद्यमत्वं निजमित्रकष्टं मन्ये सरुक्त्वं नृपतेर्भयं स्यात् ॥ धर्मार्थनाशं रिपुचोरभीतिं त्वभीष्टपीडा व्ययगेंथिहायाः ॥२८७॥

यदि मुंथा बारहवें स्थान में हो तो निरुद्यम निज़मित्रों को कष्ट धर्म अर्थका नाश चोरभीति और अभीष्ट की प्राप्ति न हो ॥२८७॥

मासेश्वरः केंद्रगतो नराणां कर्मोदयं राज्यविवर्द्धनं च ॥ स्त्रीणां विलासं धनधान्यलाभं करोति हि स्निग्धसमागमं च॥२८८॥

यदि मासका अधिपति केन्द्र में स्थित हो तो कर्मोदय राज्य की वृद्धि हो स्त्री का विलास धनधान्य का लाभ और

इष्ट जन का समागम हो ॥२८८॥

मासेश्वरः पंचमगः करोति धनागमं संततिमेव सौख्यम् ॥ प्रतापवृद्धिं विजयं रिपूणां सर्वार्थलाभं कथितं मुनीन्द्रैः ॥२८९॥

जो मासाधिपति पंचमस्थान में स्थित हो तो धन का आगम और सन्तति का सुख होता है और प्रताप वृद्धि शत्रुओं से जय और सर्वार्थ का लाभ होता है ऐसा मुनीन्द्र कहते हैं ॥२८९॥

तृतीयस्थो यदा भौमश्चंद्रेण यदि संयुतः॥ तदा मासे महल्लाभं धनधान्यं स्त्रियः सुखम् ॥

जो मंगल तीसरे स्थान में स्थित हो चन्द्रमा के साथ में हो तो उस महीने में महालाभ धनधान्य और स्त्री का सुख होता है ॥२९०॥

मासेश्वरो भाग्यगतः करोति धनागमं संततमेव सौख्यम् ॥ प्रतापवृद्धिं विजयं रिपूणां सर्वार्थलाभं कथितं मुनीन्द्रैः ।२९१।

जो मासाधिपति भाग्यस्थानमें हो तो धनागम और संतानका सुख होता है, प्रतापवृद्धि शत्रुओं से जय और सर्वार्थलाभ होता है यह मुनिजन कहते हैं ॥२९१॥

लग्ननाथो नवमगो भाग्यनाथो यदा सुते ॥
तदा मासे सुखं लाभो महाभाग्योदयो भवेत् ॥२९२॥

जो लग्न का स्वामी नवमें स्थान में स्थित हो और भाग्य का पति पुत्रस्थान में स्थित हो तो उस महीने में सुखलाभ भाग्योदय हो ॥२९२॥

इति श्रीज्योतिषशास्त्रे
पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृत
भाषाटीकासहितः वर्षयोगसमूहः
समाप्तः ॥

पुस्तकें मिलने के स्थान :–

१: खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, सातवीं खेतवाड़ी खम्बाटा लेन बम्बई–४०० ००४	२: गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, व बुक डिपो, अहिल्या बाई चौक, कल्याण, (जि० ठाणे–महाराष्ट्र)

३: खेमराज श्रीकृष्णदास, चौक–वाराणसी (उ: प्र:)

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS